संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 268
पृष्ठ 8
गुरूवार
18 जून 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- चेहरे पर प्राकृतिक निखार लाने..

विचार- संवैधानिक संस्थाओं की भूमिका...

खेल- वर्ल्ड कप में चमके किलियन...

मुख्यमंत्री योगी की रीलबाज पुलिस कर्मियों को चेतावनी, बोले-

काम को टालने की प्रवृति बंद होनी चाहिए

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिशन रोजगार के तहत उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड द्वारा चयनित 930 कंप्यूटर ऑपरेटरों (ग्रेड–ए) को बुधवार को लोकभवन में नियुक्ति पत्र प्रदान किए। उन्होंने चयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं और पारदर्शी भर्ती को ससमय पूरा करने के लिए भर्ती बोर्ड को धन्यवाद दिया। सीएम ने कहा कि आप सभी प्रधानमंत्री मोदी जी के 'विकसित भारत' विजन को बढ़ाने के सारथी हैं। इसके लिए आत्म अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण है और आप इसे बनाए रखेंगे। ड्यूटी के प्रति सजगता और हर कार्य में गंभीरता होनी चाहिए। ड्यूटी के दौरान रील बनाना अनुशासनहीनता है। ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे हंसी का पात्र बनना पड़े। सीएम ने विश्वास जताया कि सभी नवचयनित अभ्यर्थी यूपी पुलिस की आधुनिक तकनीक एवं सुरक्षा मानकों आदि की जानकारी के साथ टीम भावना, पारदर्शिता, निष्पक्षता के साथ अच्छा परफॉरमेंस देंगे।। सीएम ने कहा कि यूपी पुलिस ने जनसेवा को केंद्र में रखा तो देश में निखर गई। अब कोई यूपी पुलिस पर अंगुली नहीं उठाता। कालचक्र की परवाह किए बिना व्यक्ति अनिर्णय का शिकार होता है और अंततः बिखर जाता है। यूपी पुलिस की नई पहचान सिर्फ संख्या बल के आधार पर नहीं है। पीएम मोदी की अपेक्षा पर सुशासन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यूपी पुलिस ने 9 साल में जिस त्वरित गति से काम किया, वह मॉडल पुलिसिंग का उदाहरण बना है। नवचयनित कार्मिकों की स्मार्ट पुलिस व डिजिटल वॉरियर्स के रूप में बड़ी भूमिका होने जा रही है। सीएम ने नवचयनित अभ्यर्थियों से 2017 के पहले के यूपी की चर्चा की और कहा कि उस समय आप सभी माता–पिता पर आश्रित रहे होंगे। उस उम्र में बहुत चिंता भी नहीं होती है, परंतु 10 वर्ष पहले पत्र–पत्रिकाओं, अखबारों की कतरनों का अवलोकन कीजिए, अभिभावकों व गुरुजनों से पूछिए कि 2017 के पहले का उत्तर प्रदेश कैसा था।

कानून व्यवस्था कैसी थी? प्रदेश के बारे में, पुलिस के बारे में जनता की धारणा क्या थी? औसतन हर दूसरे–तीसरे दिन दंगा होता था। उत्सव के पहले उपद्रव होता था, महीनों कर्फ्यू लगता था, लेकिन अब हर किसी को सुरक्षा मिल रही है। 9 वर्ष से यूपी में कहीं कर्फ्यू नहीं लगा। मुख्यमंत्री ने कहा, पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम की बात 1972 से चली आ रही थी, लेकिन कोई इसे लागू नहीं कर पा रहा था। मामला फाइलों में ही दबा रह जाता था। हमारी सरकार बनी तो 7 जनपदों में पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम लागू कर दिया। यह पुलिस रिफॉर्म का पार्ट है। जिन लोगों को पुलिस रिफॉर्म या पुलिसिंग की जानकारी नहीं वे ही कमिश्नरेट सिस्टम पर अंगुली उठाते हैं। ये वही लोग हैं, जिनको आम नागरिकों की सुविधा व सुरक्षा की चिंता नहीं।

सीएम ने कहा कि 2017 के पहले पुलिस अधिकारी ही असुरक्षित थे। मुरादाबाद में डीआईजी स्तर के अधिकारी को उपद्रवियों ने घेरकर मारा था और उन्हें जीवित न मानकर छोड़ गए। सोचिए, जब राज्य में आईपीएस और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ही सुरक्षित नहीं थे तो सामान्य नागरिक, महिला, बेटी–बहन, व्यापारी की सुरक्षा सिर्फ कल्पना थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि उस दौर में यूपी के लोगों ने सुधार की कल्पना करना ही छोड़ दिया था।

डबल इंजन सरकार आने के बाद कार्रवाई शुरू हुई तो अपराधियों को बचाने के लिए राजनीतिक दबाव भी आए, लेकिन सरकार की अभियोजन शाखा के प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि कुछ दिनों पहले ही उन अपराधियों को इतनी गंभीर सजा मिली कि अब उनकी कई पीढ़ियां भी अपराध करना भूल जाएंगी।

भारत का रक्षा उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा

मोदी बोले- ये प्रगति की एक झलक

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत ने रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। वित्त वर्ष 2025–26 में देश का कुल रक्षा उत्पादन 1.78 लाख करोड़ रुपये के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। यह पिछले साल के 1.54 लाख करोड़ रुपये के मुकाबले 15.6 प्रतिशत अधिक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पर एक जानकारी साझा करते हुए बताया कि पिछले एक दशक में भारत की रक्षा क्षमताओं में बड़ा बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता के विजन, नई तकनीक और स्वदेशी निर्माण ने भारत को मजबूती दी है। प्रधानमंत्री ने पिछले 12 वर्षों के सफर का जिक्र करते हुए बताया कि कैसे भारत ने जल, थल और नभ में अपनी ताकत बढ़ाई है। उन्होंने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक मजबूत नींव करार दिया। आंकड़ों पर नजर डालें तो रक्षा उत्पादन में पिछले कुछ वर्षों में जबरदस्त उछाल आया है। साल 2020–21 में यह आंकड़ा 84,643 करोड़ रुपये था, जिसमेंअब तक 110 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो चुकी है। वहीं, साल 2013–14 की तुलना में रक्षा उत्पादन अब लगभग चार गुना बढ़ गया है। उस समय यह केवल 43,746 करोड़ रुपये था। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस बड़ी सफलता के लिए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना की है। उन्होंने कहा कि यह विकास देश के मजबूत होते रक्षा औद्योगिक आधार का प्रमाण है। उन्होंने सरकारी विभाग के साथ–साथ निजी क्षेत्र की मेहनत को भी सराहा।

टेलीग्राम बैन पर भड़के राहुल गांधी, बोले

माफिया पर वार करें, छात्रों पर नहीं

कोटा,एजेंसी। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को नीट–यूजी पेपर लीक की चिंताओं के बीच टेलीग्राम पर लगाई गई पाबंदियों को लेकर केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार पेपर लीक माफिया पर कार्रवाई करने के बजाय छात्रों को निशाना बना रही है। यह कदम नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा मंगलवार को भारत में टेलीग्राम प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल पर एक तय और सीमित समय के लिए रोक लगाने के बाद उठाया गया है। यह रोक 22 जून 2026 तक लागू रहेगी, जिसमें नीट 2026 की दोबारा परीक्षा का दिन और उसके ठीक बाद का समय भी शामिल है। एक्स पर एक पोस्ट में गांधी ने कहा कि टेलीग्राम पर बैन– पेपर लीक रोकने के लिए मोदी सरकार का नया हथकंडा। यानी, चोर को पकड़ने के बजाय, पीड़ित के दरवाजे पर ही ताला लगा दो। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि लाखों छात्र सालों से टेलीग्राम पर पढ़ाई कर रहे हैं और पेपर लीक की समस्या का समाधान इस सुविधा को छीनना नहीं है। पोस्ट में लिखा था कि लाखों छात्र सालों से टेलीग्राम पर पढ़ाई कर रहे हैं – नोट्स, टेस्ट सीरीज, चर्चा और तैयारी। तो फिर, उस सुविधा को छीनना पेपर लीक का समाधान कैसे हो सकता है? ऐसे कदमों की असरदारता पर सवाल उठाते हुए उन्होंने लिखा कि और यह तरीका पूरी तरह सुरक्षित भी नहीं है – देश का हर छात्र यह बात जानता है, और पेपर लीक करने वाला माफिया भी। तो, अगला बैन किस पर लगेगा? व्हाट्सएप पर? परीक्षा के दिन की व्यवस्थाओं पर तंज कसते हुए गांधी ने कहा कि परीक्षा के दिन छात्रों की तलाशी ली जाएगी। कैंची से जेबें काटी जाएंगी। प्रश्न पत्र एयर फोर्स के जरिए भेजे जाएंगे। ड्रामेबाजी की कोई कमी नहीं होगी। लेकिन समस्या की जड़ पर कोई प्रहार नहीं होगा – क्योंकि पेपर लीक माफिया इसी सरकार की नाक के नीचे फल–फूल रहा है और युवाओं को खून के आँसू रुला रहा है। उन्होंने आगे कहा कि मोदी जी – ड्रामेबाजी छोड़िए। माफिया पर प्रहार कीजिए, छात्रों पर नहीं। छात्रों की आवाज सुनिए – वरना देश के युवा जानते हैं कि अपने हक के लिए कैसे लड़ना है। यह बयान तब आया है जब केंद्र सरकार ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के अनुरोध पर टेलीग्राम को ब्लॉक करने का आदेश दिया।

डबल-इंजन सहयोग बिहार को चौतरफा विकास की नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा : सम्राट चौधरी

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बुधवार को कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के डबल इंजन सहयोग से बिहार को चौतरफा विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जाएगा। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज यहाँ कृषि एवं ग्रामीण विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर उच्चस्तरीय बैठक की। बैठक में किसानों की समृद्धि, ग्रामीण आधारभूत संरचना को मजबूत करने और जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री चौधरी ने कहा कि मनरेगा के बकाया भुगतान को लेकर सकारात्मक निर्णय लिया गया है और केंद्र सरकार के सहयोग से सभी लंबित भुगतान 30 जून से पहले कर दिए जाएंगे।

जून का सावित्री देवी स्मृति सम्मान शहर समता महिला काव्यगोष्ठी जबलपुर इकाई की सदस्या आदरणीया छाया सक्सेना जी को दिया जाएगा

प्रयागराज। हर माह मिलने वाला सावित्री देवी स्मृति सम्मान जून 2026 का शहर समता महिला काव्यगोष्ठी जबलपुर इकाई से आदरणीया छाया सक्सेना जी को दिया जाएगा। रचनाकार छाया सक्सेना जी पर चार पेज का सावित्री देवी स्मृति सम्मान विशेषांक भी प्रकाशित होगा, जिसमें रचनाकार को 30–35 कविताएं, कहानी, अपना जीवनवृत्त और अपना आत्मसंघर्ष टाइप करके देना पड़ेगा। साथ में एक पोस्ट कार्ड साइज की फोटो भी।

45 दिन में दिल्ली की पांच झुग्गी बस्तियों का बदलेगा नक्शा

पक्के घर की ओर बढ़ेंगे लाखों परिवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की झुग्गी और जेजे क्लस्टर बस्तियों में रहने वाले लाखों परिवारों के लिए पक्के घर का रास्ता साफ हो गया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई उच्चस्तरीय बैठक में 'दिल्ली स्लम एंड जेजे क्लस्टर पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन नीति–2026' को मंजूरी मिलने के बाद अब इसके क्रियान्वयन की तैयारी शुरू हो गई है। पहले चरण में अगले 45 दिनों के भीतर पांच जेजे क्लस्टरों के लिए टेंडर जारी किए जाएंगे। केंद्रीय गृह मंत्री के साथ हुई इस मीटिंग में केंद्रीय शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर, दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, दिल्ली के गृह विभाग मंत्री आशीष सूद भी मौजूद रहे। उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने बताया कि नीति को जमीन पर उतारने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) और डूसिब जल्द ही पांच जेजे क्लस्टरों के लिए व्यवहारिक टेंडर जारी करेंगे। इसके बाद हर महीने कम से कम पांच ऐसी परियोजनाओं के टेंडर निकालने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि पुनर्वास प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जा सके। इस नीति का सबसे बड़ा उद्देश्य झुग्गी बस्तियों में रहने वाले परिवारों को बेहतर और सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना है। सरकार का लक्ष्य है कि वर्षों से अस्थायी परिस्थितियों में रह रहे लोगों को आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्थायी घर मिल सकें। इससे न केवल उनके जीवन स्तर में सुधार आएगा, बल्कि दिल्ली के शहरी विकास को भी नई दिशा मिलेगी।

पुनर्वास परियोजनाओं में केवल आवास उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं रखा जाएगा। नए क्षेत्रों में स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, आंगनवाड़ी और अन्य जरूरी सामाजिक सुविधाओं को भी शामिल किया जाएगा। इससे पुनर्वासित परिवारों को शिक्षा, स्वास्थ्य और मूलभूत सेवाएं उनके नए आवास के आसपास ही उपलब्ध हो सकेंगी। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी 'जहां झुग्गी वहां मकान' पहल के तहत दिल्ली की अनधिकृत झुग्गी बस्तियों को व्यवस्थित आवासीय क्षेत्रों में बदलने की योजना बनाई गई है। दिल्ली के गृह मंत्री आशीष सूद ने इसे राजधानी को विकसित भारत के अनुरूप विकसित दिल्ली बनाने की दिशा में बड़ा कदम बताया। उन्होंने कहा कि नीति लागू होने से लाखों परिवारों को सम्मानजनक आवास, बेहतर सुविधाएं और सुरक्षित भविष्य मिल सकेगा।

हल्दीघाटी युद्ध महाराणा प्रताप जीते, लेकिन चर्चा उल्टी: मोहन भागवत

उदयपुर,एजेंसी। उदयपुर में राष्ट्र चेतना संकल्प सभा में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हल्दीघाटी के युद्ध को लेकर इतिहासकारों ने केवल नैरेटिव बनाया। युद्ध में केवल जीत महाराणा प्रताप की हुई थी। मुगलों के ही इतिहासकार लिखते हैं कि मुगलों को पीछे खिसकना पड़ा। फिर विजय किसकी हुई? हल्दीघाटी में विजय का ही परिणाम है कि आज महाराणा प्रताप की जयंती मनाई जा रही है, अकबर की जयंती कोई नहीं मनाता है। दरअसल, महाराणा प्रताप की जयंती 486वीं जयंती और हल्दीघाटी विजय के 450 साल पूरे होने पर उदयपुर में तीन दिवसीय कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इसी क्रम में आज उदयपुर के गांधी ग्राउंड में सभा का आयोजन किया गया। इसमें आरएसस प्रमुख के अलावा सीएम भजनलाल शर्मा व अन्य भाजपा नेता भी पहुंचे थे। संकल्प सभा निम्बार्क पीठ के पीठाधीश्वर श्याम शरण देवाचार्य भी शामिल हुए थे। उन्होंने कहा कि आज कई लोग हमारी एकता को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे लिए राष्ट्र ही प्रथम होना चाहिए। उन्होंने कहा कि निर्मल कीचड़ से कमल का जन्म होता है। जबकि, मलयुक्त कीचड़ से केवल कॉकरोच का जन्म होता है। हमें ध्यान रखना होगा कि हमें केवल निर्मल कमल की ओर ही बढ़ना होगा। पीठाधीश्वर के कॉकरोच की बात करने पर मोहन भागवत भी मुस्कुराने लगे। प्रताप या सेना नहीं, पूरा समाज लड़ा : सरसंघचालक ने कहा– आज हम राणा प्रताप की जयंती मनाते है, आपने कभी सुना कि कहीं अकबर की कोई जयंती है? हल्दीघाटी युद्ध में केवल प्रताप या सेना ही नहीं यहां पूरा समाज लड़ा।

पेपर लीक अरबों का रैकेट, पैसा ऊपर तक जाता है! : केजरीवाल

नयी दिल्ली,एजेंसी। आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को भारत में टेलीग्राम प्लेटफॉर्म तक पहुंच सीमित करने के लिए केंद्र सरकार की आलोचना की और इन उपायों को परीक्षा के पेपर लीक रोकने में बेअसर बताया। एक्स पर एक पोस्ट में केजरीवाल ने टेलीग्राम पर पाबंदी और परीक्षा के पेपर हवाई मार्ग से पहुँचाने के लिए भारतीय सेना के इस्तेमाल को सरकार के बेतुके कदम बताया। उन्होंने सवाल किया कि सेना के विमानों से पेपर पहुँचाना, टेलीग्राम बंद करना... क्या इन कदमों से पेपर लीक रुकेंगे? बिल्कुल नहीं। केजरीवाल ने आगे आरोप लगाया कि पेपर लीक का धंधा कई अरब रुपयों का रैकेट है।

सांसदों की खरीद-फरोख्त पर कांग्रेस का गृह मंत्री पर हमला, कहा- भारतीय लोकतंत्र को कर रहे बर्बाद

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस ने बुधवार को गृह मंत्री अमित शाह पर विपक्ष पर हमला करने और भारतीय लोकतंत्र को नष्ट करने का आरोप लगाया। क्योंकि इस साल 17 अप्रैल को लोकसभा में संविधान संशोधन विधेयक पारित कराने में विफल रहने पर उन्हें मिली अपमानित हार का बदला लिया जा सके। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री लोकसभा में परिसीमन विधेयकों को पारित कराने में विफल रहने के बाद मिली अपनी अपमानजनक हार की भरपाई के लिए विपक्ष पर अपना हमला जारी रखे हुए हैं और भारतीय लोकतंत्र को नष्ट कर रहे हैं। रमेश ने एक्स पर आरोप लगाते हुए कहा, उनके प्रलोभन उन लोगों को आकर्षित कर रहे हैं जो महज दो साल पहले भाजपा विरोधी मजबूत एजेंडे पर चुने गए थे। अब वे भाजपा में शामिल हो रहे हैं। उन्हें कथित तौर पर दिए जा रहे प्रोत्साहन चौंका देने वाले हैं।

कांग्रेस के संचार प्रभारी महासचिव ने आरोप लगाया कि गृह मंत्री एक पूरी तरह से निंदनीय अभियान चला रहे हैं, जो सुनियोजित है और म्यूचुअल फंड उद्योग की तरह, व्यक्तिगत जरूरतों के अनुरूप विभिन्न योजनाएं और उत्पाद पेश करता है। रमेश ने जोर देकर कहा उसकी दुष्टता की कोई सीमा नहीं है। लेकिन वह अपने अंतिम लक्ष्य में सफल नहीं होगे। उनकी यह टिप्पणी शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत के मंगलवार देर रात के उस दावे के बाद आई है जिसमें उन्होंने कहा था कि महाराष्ट्र से सांसदों को खरीदने के लिए 15 करोड़ रुपये का अग्रिम भुगतान किया जा रहा है, जिससे पार्टी के लोकसभा सदस्यों के एक वर्ग के पाला बदलने की तेज अटकलों को और बल मिला है।

भयहरणनाथ धाम की प्रबन्ध समिति का पुनर्गठन फरवरी 2027 में

रविवार 21 को संस्थान की बैठक में सदस्यता अभियान व मतदाता सूची पर होगी चर्चा

समीपवर्ती ग्रामों में गठित सामाजिक विकास केंद्र का जुलाई माह में होगा नवीनीकरण

सबके लिए खुला है मंदिर है यह हमारा– समाज शेखर

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरणनाथ धाम में प्रबन्ध संस्था भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान के प्रबन्ध समिति का पुनर्गठन नियमानुसार फरवरी 2027 में होगा। उससे पूर्व सदस्यता अभियान चला कर अधिक से अधिक धर्मावलंबियों को जोड़ा जायेगा तदोपरांत अंतिम सदस्यता सूची का प्रकाशन वार्षिक अधिवेशन से पूर्व पूर्ण किया जायेगा। 2017 में धाम के

प्रतापगढ़ व प्रयागराज जनपदों के समीपवर्ती ग्रामों में बने सामाजिक विकास केंद्रो का पुनर्गठन जुलाई माह में अभियान चलाकर पूर्ण किया जायेगा। यह जानकारी देते हुए धाम के महासचिव समाज शेखर ने बताया कि भयहरणनाथ धाम की प्रबन्ध संस्था का नियमित चुनाव फरवरी 2027 में सभी नियमो का पालन करते हुए निष्पक्ष होगा। चुनाव से पूर्व सभी औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। उन्होंने बताया कि प्रबन्ध संस्था के पंजीकरण के 20 वर्ष फरवरी 2027 में पूर्ण होंगे ऐसे में जन सहयोग और लोक भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु अधिक से अधिक सदस्यों को जोड़ा जायेगा। सबके लिए खुला है मंदिर यह है हमारा ध्येय वाक्य ही प्रबन्ध संस्था व क्षेत्रीय समाज का उदेश्य है। 21 जून रविवार को धाम में कब्जा मुक्ति हेतु आयोजित 15 वें सामाजिक सत्याग्रह के पश्चात प्रबन्ध संस्थान के साथ इन मुद्दों पर चर्चा करके आवश्यक निर्णय लिए जायेंगे। वही 2023 में पुनर्गठित मंदिर व मेला उप समितियों के सक्रियता, पुनर्गठन की आवश्यकता के साथ अधिकमास मेले की समीक्षा भी होगी।

गर्मी ने बढ़ाई लोगों की परेशानी

प्रयागराज। लगातार बढ़ते तापमान ने जनजीवन को पूरी तरह प्रभावित कर दिया है। तापमान कई दिनों से 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दर्ज किया जा रहा है। सुबह से ही तेज धूप और गर्म हवाओं ने लोगों को परेशान कर दिया है। भीषण गर्मी का असर बाजार और फोरलेन सड़कों पर भी दिखाई दे रहा है।

दोपहर में बाजार और प्रमुख मार्ग लगभग सूने नजर आ रहे हैं। गर्म हवाओं और लू के थपेड़ो ने राहगीरों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। अस्पतालों में भी गर्मी से संबंधित मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है। उल्टी, चक्कर, डिहाइड्रेशन जैसी समस्याओं के मामले बढ़ रहे हैं। चिकित्सकों ने दोपहर बारह बजे से शाम चार बजे तक धूप में निकलने से बचने, अधिक पानी पीने और हल्के कपड़े पहनने की सलाह दी है।

मुख्य संपर्क मार्ग पर जलभराव होने से राहगीर परेशान

प्रयागराज। बहरिया क्षेत्र के सराय सुल्तान उर्फ पूरे मखदूम गांव का मुख्य संपर्क मार्ग पर जलभराव की समस्या से राहगीर परेशान हैं। सड़क किनारे नाली न होने के कारण बरसात का पानी और दूषित जल सड़क पर जमा हो गया है। सड़क का बड़ा हिस्सा पानी में डूब गया है और मार्ग तालाब जैसा दिखाई देने लगा है। ग्रामीणों के अनुसार यह मार्ग क्षेत्र के कई गांवों को जोड़ने वाला मुख्य संपर्क मार्ग है। जलभराव के कारण सड़क पर बड़े–बड़े गड्ढे बन गए हैं, जो पानी भरे होने के कारण दिखाई नहीं देते। इससे दोपहिया वाहन चालकों और राहगीरों को हादसे की आशंका बनी रहती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि नाली निर्माण न होने के कारण पानी की निकासी नहीं हो रही है और हर वर्ष बरसात में यही स्थिति बन जाती है। ग्राम विकास अधिकारी राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि पीडब्ल्यूडी की सड़क पर पानी भरा हुआ है लेकिन कुछ ग्रामीणों ने पानी को बाधित किया हुआ है, जिससे जलनिकासी में दिक्कत हो रही है। सफाई कर्मियों को निर्देश दिए गए हैं, तत्काल पानी निकाला जाएगा।

कृषि नवाचार और किसान प्रशिक्षण पर किया मंथन

प्रयागराज। कोरडेट की 92वीं प्रबंध समिति की बैठक मंगलवार को कोरडेट फूलपुर के सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में कृषि विकास, किसान प्रशिक्षण और कृषि विस्तार गतिविधियों की समीक्षा के साथ भविष्य की कार्ययोजना पर चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य अतिथि वाल्मीकि त्रिपाठी ने कहा कि कोरडेट लगातार किसानों के हित में कार्य करते हुए उन्हें नई तकनीकों और वैज्ञानिक खेती के प्रति जागरूक कर रहा है। इफको फूलपुर इकाई प्रमुख पीके सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को उन्नत कृषि पद्धतियों की जानकारी दी। बैठक के संयोजक प्रधानाचार्य डॉ. विवेक दीक्षित ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. डी.के. सिंह ने कोरडेट फूलपुर की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संस्थान की उपलब्धियों और गतिविधियों की जानकारी दी। कोरडेट पारादीप के प्रधानाचार्य कुलमनी माझी तथा कोरडेट आंवला के प्रधानाचार्य डॉ. अरविंद ढाका ने अपने–अपने केंद्रों में संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कृषि विस्तार कार्यों का विवरण समिति के समक्ष रखा।

पुराने रास्ते से ही गुजरेगी ताजिया

प्रयागराज। मोहर्रम के ताजिया जुलूस के लिए मंगलवार को लालापुर थाने में उपजिलाधिकारी बारा और थानाध्यक्ष लालापुर ने ताजियेदारों के साथ बैठक की। बैठक में सबसे पहले एसडीएम बारा डॉ गणेश कनौजिया और थानाध्यक्ष लालापुर अनुभव सिंह ने ताजियेदारों और मुस्लिम धर्म गुरुओं से गांव की समस्याओं के बारे में जानकारी ली। एसडीएम ने कहा विगत वर्षों की तरह जिस रास्ते से जुलूस निकलता था, उसी रास्ते से ही निकलेगा। जहां पुलिस और पीएसी की तैनाती रहेगी।

यूपी में ट्रिपल मर्डर: नहर किनारे मुलाकात के बाद रची गई तिहरे हत्याकांड की साजिश! मोबाइल फोन से खुलेंगी परतें

प्रयागराज। प्रयागराज के नीबी कुकुरकटवा गांव में हुए तिहरे हत्याकांड के बाद परिजनों ने आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग की है। उनका कहना है कि जिस परिवार ने तीन लोगों को उजाड़ दिया, उसके खिलाफ ऐसी कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे समाज में सख्त संदेश जाए। परिजनों ने आरोपियों के एनकाउंटर की भी मांग उठाई।

प्रयागराज के नीबी कुकुरकटवा गांव में हुए तिहरे हत्याकांड में पुलिस को अहम जानकारी मिली है। पुलिस को आशंका है कि तिहरे हत्याकांड की साजिश वारदात से तीन दिन पहले 13 जून को ही राजापुर में एक नहर किनारे हुई एक शख्स से मुलाकात के बाद रची गई थी।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, हिमांशु यादव की मुलाकात मांडा के राजापुर स्थित एक नहर किनारे एक शख्स से हुई थी। बताया जा रहा है कि इसी दौरान दोनों के बीच बातचीत हुई। हिमांशु से कहा गया था कि श्यामलाल गुप्ता और घर के कुछ लोग शादी के लिए तैयार नहीं हैं। वही सबसे बड़ी बाधा बने हुए हैं।

इसी बात से नाराज होकर हिमांशु ने श्यामलाल और उनके परिवार को धमकी दी थी। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि नहर किनारे हुई मुलाकात के बाद आरोपी ने किन लोगों से संपर्क किया और वारदात की योजना कब बनाई। बहरहाल, पुलिस जांच में एक और नाम भी सामने आया है, जिसे पुलिस जल्द ही खुलासा कर सकती है।

मोबाइल फोन से खुलेंगी परतें

पुलिस सभी के मोबाइल फोन की जांच करने की तैयारी में है। पुलिस मोबाइल चौट, कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर), मैसेज और अन्य डिजिटल साक्ष्यों के जरिये पूरे घटनाक्रम की कड़ी जोड़ने का प्रयास कर रही है। जांच में यह भी देखा जा रहा है कि 13 जून की मुलाकात के बाद हिमांशु और अन्य आरोपियों के बीच क्या बातचीत हुई थी। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जांच में सामने आने वाले सभी तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

उधर, मृतक परिवार की सदस्य सरस्वती देवी और उनके बेटों का आरोप है कि हिमांशु काफी समय से परिवार को परेशान कर रहा था। वह शादी के लिए दबाव बना रहा था। पुलिस को भी इसकी जानकारी दी थी, लेकिन समय रहते कार्रवाई नहीं हुई।

वहीं, मटिही गांव से पहुंचे रिश्तेदारों ने कहा कि घटना बेहद दर्दनाक है। यदि पुलिस मामले को गंभीरता से लेती तो तीन लोगों की हत्या होने से बच सकती थी। परिवार कई दिनों से डर के माहौल में था। धमकियों के बाद भी कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, जिसका नतीजा इतना भयावह हुआ।

परिवार को खत्म करने की दी थी धमकी

पुलिस बयान में परिजनों ने आरोप लगाया कि हिमांशु यादव मंजेश की बेटी से शादी करना चाह रहा है। घरवालों को यह रिश्ता मंजूर नहीं है। शादी की खिलाफत करने पर हिमांशु ने पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी थी। उसी ने अपने साथियों संग वारदात को अंजाम दिया। हिमांशु का नाम सामने आने पर पुलिस ने उसके घर पर दबिश दी लेकिन वह फरार था।

पुलिस जांच में पता चला कि हिमांशु और किशोरी फरवरी में बिना बताए घर से चले गए थे। गांव में पंचायत हुई तो दोनों वापस आए। किशोरी के बड़े पापा श्यामलाल इस रिश्ते का सबसे ज्यादा विरोध कर रहे थे। सुरक्षा के लिहाज से उन्होंने भतीजी को उसकी ननिहाल भेज दिया था। इस फैसले से हिमांशु उनसे नाराज था। शाम छह बजे पोस्टमार्टम के बाद तीनों शव घर पहुंचा तो कोहराम मच गया।

प्रयागराज में ट्रिपल मर्डर

प्रयागराज के मेजा के नीबी कुकुरकटवा गांव में शादी की राह में रोड़ा बन रहे एक परिवार के तीन लोगों की सोमवार रात नृशंस हत्या कर दी गई। तीनों के खून से लथपथ शव घर के अहाते से लेकर बाहर तक पड़े मिले। आरोप है कि पड़ोसी युवक हिमांशु यादव ने अपने दो साथियों राजन यादव और निहाल गौतम के साथ मिलकर वारदात को अंजाम दिया।

मरने वालों में किशोरी के बड़े पापा श्यामलाल गुप्ता (65) और दो बड़ी मां अमरावती (55) और इंद्रावती (60) शामिल हैं। तीनों हत्यारोपियों समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। रामनगर चौकी इंचार्ज रामविलास को निलंबित कर दिया गया है। उधर, हत्या में प्रयुक्त हथियार की बरामदगी के दौरान पुलिस मुठभेड़ में मुख्य आरोपी हिमांशु के पैर में गोली लग गई।

श्याम लाल गुप्ता पांच भाइयों में सबसे बड़े थे। वह घर पर ही किराने की दुकान चलाते थे। दो भाई दूधनाथ और मंजेश की मौत हो चुकी है। नेब्बू लाल बंगलूरू में और रामधनी परिवार के साथ राजस्थान में रहते हैं। गांव में श्याम लाल और उनकी मानसिक रूप से बीमार पत्नी फूलकली, नेब्बू लाल की पत्नी अमरावती, दूधनाथ की पत्नी इंद्रावती देवी एक साथ रहते थे। साथ में ही मंजेश की पत्नी, उनके चार बेटे आशीष, विशेष, विवेक, शिवांश और दो बेटियां भी रहती हैं, लेकिन वारदात के दिन मंजेश की पत्नी अपने परिवार के साथ भाई के घर गई थीं। सोमवार रात करीब 10रू30 बजे आरोपी युवक श्याम लाल के घर में घुसे और परिवार पर हमला बोल दिया।

सभी लोगों ने जान बचाकर भागने का प्रयास किया। तीनों आरोपियों ने उन्हें घेर लिया। खूंटे से सिर पर वार कर श्यामलाल, अमरावती और इंद्रावती को बेरहमी से मार डाला। श्यामलाल की पत्नी फूलकली को आरोपियों ने कोई नुकसान नहीं पहुंचाया।

मंगलवार सुबह पुलिस आयुक्त जोगेंद्र कुमार, अपर पुलिस आयुक्त डॉ. अजयपाल शर्मा, डीसीपी यमुनानगर विवेक यादव समेत अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे। फॉरेंसिक टीम ने डॉग स्क्वॉड के साथ साक्ष्य जुटाए। एक ही परिवार के तीन लोगों की हत्या के बाद गांव में दहशत का माहौल है।

परिजनों का फूटा गुस्सा, बोले–आरोपियों के घर चले बुलडोजर एनकाउंटर की मांग, कहा– पहले कार्रवाई होती तो नहीं जाती जान

नीबी कुकुरकटवा गांव में हुए तिहरे हत्याकांड के बाद परिजनों ने आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग की है। उनका कहना है कि जिस परिवार ने तीन लोगों को उजाड़ दिया, उसके खिलाफ ऐसी कार्रवाई होनी चाहिए, जिससे समाज में सख्त संदेश जाए। परिजनों ने आरोपियों के एनकाउंटर की भी मांग उठाई।

सांसद अपना वादा निभाओ, जर्जर सड़क की मरम्मत कराओ

प्रयागराज। डेढ़ दशक से गड्ढों में तब्दील जर्जर टेला से बरौत व बरौत से बिठौली मार्ग की मरम्मत के लिए जनाक्रोश नहीं थम पा रहा है। मंगलवार को उपरदहां गांव स्थित जनसुनवाई कार्यालय पहुंचते ही सांसद भदोही डॉ. विनोदकुमार बिंद को समाजसेवी विष्णुकांत पांडेय की अगुवाई में ग्रामीणों ने जल्द सड़क निर्माण कराए जाने के लिए ज्ञापन सौंपा।

उन्होंने कहा कि भाजपा प्रत्याशी के रूप में चुनाव के दौरान वर्तमान सांसद की ओर से उक्त बदहाल सड़क की मरम्मत कराने का वादा किया गया था। ग्रामीणों ने टेला–मदरा गंगा घाट पर पक्का पुल और

भीटी रेलवे स्टेशन के बगल बरौत–टेला मार्ग पर अंडर पास बनवाए जाने की भी मांग किया।

इस दौरान सांसद डॉ,.विनोद कुमार बिंद ने ग्रामीणों को भरोसा दिया कि उक्त सड़क का चौड़ीकरण, पुनर्निर्माण का प्रस्ताव सरकार के पास विचाराधीन है। स्वीकृत मिलते ही जल्द निर्माण प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी। इस मौके पर कमलेश मिश्रा, मुकेश पांडेय, पिंटू मिश्रा, धर्मेंद्र यादव, रजनीश शुक्ला, सुमित मिश्रा, लल्लू पांडेय, आनंद मिश्रा आदि रहे।

राजस्व टीम पर जानलेवा हमले से लेखपालों में नाराजगी

प्रयागराज। उतरांव थाना क्षेत्र के थूलमा गांव में सोमवार को सरकारी जमीन का सीमांकन करने गई राजस्व टीम पर जानलेवा हमला किया गया। हमले से नाराज लेखपालों ने लेखपाल संघ के मंत्री रजनीश श्रीवास्तव की अगुवाई में मंगलवार को कार्य बहिष्कार करके धरना कर आक्रोश जताया। सीमांकन करने गई राजस्व टीम में राजस्व निरीक्षक ओमप्रकाश शुक्ला, लेखपाल संघ हंडिया के तहसील अध्यक्ष अजय तिवारी, अरविंद कुमार व शिवकुमार शामिल थे। ईंट–पत्थर और लाठी के हमले से टीम के सभी सदस्य घायल हो गए थे। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सैदाबाद में प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल अजय तिवारी को रेफर कर दिया गया था। लेखपालों ने हमलावरों की गिरफ्तारी कर, कार्यवाही की मांग की। इस मौके पर हरिश्चंद्र, नरेंद्र यादव, दिनेश बिंद, नीरज मिश्रा सहित लेखपाल मौजूद रहे।

दिलीप मिश्रा की करोड़ों की अचल संपत्ति कुर्क

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई जारी है। प्रयागराज पुलिस कमिश्नरेट ने एक बड़ा कदम उठाया है। पुलिस ने करोड़ों रुपये की अचल संपत्ति कुर्क की है। यह संपत्ति अवैध रूप से अर्जित की गई थी। पुलिस आयुक्त न्यायालय के आदेश पर इसे सरकारी नियंत्रण में लिया गया है। यह कार्रवाई प्रयागराज के औद्योगिक क्षेत्र थाना अंतर्गत लवायन कला निवासी दिलीप मिश्रा के खिलाफ हुई है। जांच में सामने आया कि दिलीप मिश्रा ने सिलौधीकला में अवैध संपत्तियां खरीदी थीं। ये संपत्तियां उनकी पत्नी पुष्पा मिश्रा, भाभी वीरा मिश्रा और अजय कुमार मिश्रा के नाम पर थीं। प्रशासन ने मौके पर मुनादी करवाई।

करंट से घायल छात्र की इलाज के दौरान मौत

प्रयागराज। क्षेत्र के बोंगी गांव निवासी अरुण पटेल(14) दस जून को गांव के बाग में आम के पेड़ पर चढ़कर आम तोड़ रहा था। पास से गुजरे हाईटेंशन तार से करंट लगने पर झुलस गया था। परिजनों ने उसे प्रयागराज के निजी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया था। सोमवार की सुबह इलाज के दौरान अरुण की मौत हो गई।

करंट लगने से लाइनमैन घायल, अस्पताल में भर्ती

प्रयागराज। खरका गांव में मंगलवार सुबह बिजली के खंभे पर काम करते समय एक लाइनमैन करंट की चपेट में आकर झुलस गया। झुलसे लाइनमैन की पहचान 35 वर्षीय गिरजा शंकर निषाद के रूप में हुई है। मंगलवार को सुबह बिजली के खंभे पर गिरजा शंकर निषाद फ्यूज बांध रहे थे। इसी दौरान अचानक बिजली आपूर्ति चालू हो गई। करंट लगने से उनका संतुलन बिगड़ गया और वह खंभे से गिर पड़े। परिजनों ने उन्हें चाकघाट स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया।

युवती को अगवा करने की कोशिश की, आरोपी गिरफ्तार

प्रयागराज। थाना क्षेत्र के एक गांव में रास्ते से युवती का अपहरण की कोशिश करने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मामले में एक नामजद आरोपी फरार है, पुलिस उसकी तलाश कर रही है। थाना क्षेत्र के एक गांव की किशोरी रविवार की शाम सामान लेकर घर लौट रही थी। रास्ते में बाइक से आए तीन युवकों ने बलपूर्वक युवती को रास्ते से खींचकर बाइक पर बैठा लिया और ले जाने लगे। युवती के शोर करने पर आसपास के लोगों को अपनी ओर आता देख आरोपी युवती को छोड़कर भाग गए। पीड़ित की तहरीर पर धमौर के प्रवेश कुमार, अरविंद कुमार और मोनू के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पुलिस को मंगलवार को घटना में शामिल दो युवकों की बाबूगंज नहर के पास बैठने की जानकारी मिली। थानाध्यक्ष बहरिया ने टीम के साथ घेराबंदी कर आरोपी अरविंद कुमार और मोनू को गिरफ्तार कर लिया।

स्कूटी में मारी टक्कर, बाइक सवार पर प्राथमिकी

प्रयागराज। थाना क्षेत्र के जुगनीडीह स्थित पिलखिन देवी मंदिर के पास तेज स्पीड से आ रहे एक बाइक सवार ने सामने से आ रही स्कूटी में टक्कर मार दी। घायल आकाश कुमार निवासी नूरपुर थाना सोरांव बहरिया के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कर्मचारी है। वह पांच जून को अस्पताल से स्कूटी से घर जा रहे थे। वह जुगनीडीह गांव के पिलखान देवी मंदिर के पास पहुंचा कि सामने से तेज रफ्तार से आ रहे बाइक सवार ने आकाश की स्कूटी में टक्कर मार दी। जिससे आकाश कुमार का पैर टूट गया। आकाश के पिता लाल बहादुर की तहरीर पर सोमवार की देर शाम सोनबरसा निवासी बाइक सवार मो कैफ पुत्र अनवर के खिलाफ पुलिस ने प्राथमीकी दर्ज की है।

रज्जू भय्या विवि का स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

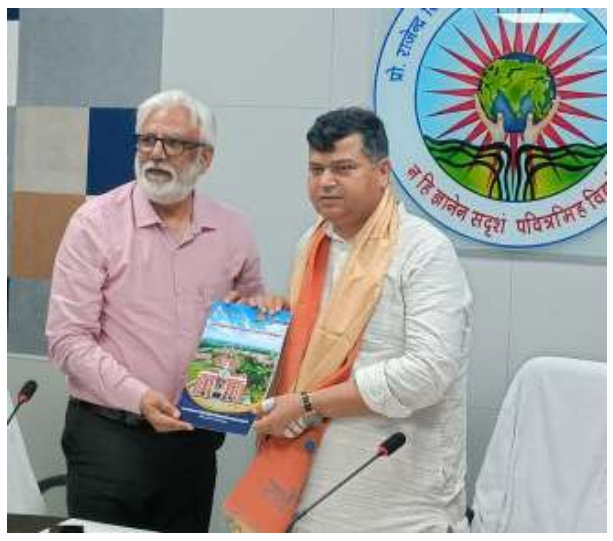

प्रयागराज। प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय के दसम वर्षगांठ पर ग्यारहवां स्थापना दिवस समारोह का भव्य आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इसके उपरान्त संस्कृत विभाग के शोधच्छात्र श्री नितिन त्रिपाठी द्वारा वैदिक मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया और विश्वविद्यालय कुलगीत का प्रसारण किया गया। समारोह में उपस्थित अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत

किया गया। स्वागत उद्बोधन एवं विश्वविद्यालय की प्रगति पर विस्तृत प्रतिवेदन कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर वर्तमान विकास यात्रा की उपलब्धियों, शैक्षिक विस्तार,शोध गतिविधियों तथा भावी योजनाओं से संबंधित विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) भारत सरकार ने मुख्य अतिथि के रुप में संबोधन देते हुए कहा कि रज्जू भय्या विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण भारतीय ज्ञान परम्परा के गौरव को प्रतिष्ठित कर रहा है। यह विश्वविद्यालय ज्ञानात्मक विकास पथ में मील का पत्थर साबित हो रहा है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम ने अपने संबोधन में बौद्धिक उत्कृष्टता के साथ बुनियादी विकास पर बल दिया। उन्होंने शैक्षिक नवाचार एवं अनुसंधान को प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय की निरन्तर प्रगति का आधार बताते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने अपने संबोधन में विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का महत्वपूर्ण केन्द्र बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार के आन्तरिक संवेदना, सहयोग एवं सह–अस्तित्व की भावना की मुक्तकण्ठ से सराहना करते हुए इसे एक आदर्श शैक्षणिक वातावरण का प्रतीक बताया। कार्यक्रम का समापन कुलसचिव डॉ. विनीता यादव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं आयोजन समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ. गीतांजलि श्रीवास्तव ने किया। कुलानुशासक प्रो. राजकुमार गुप्त, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. विवेक कुमार सिंह, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. आशुतोष कुमार सिंह सहित विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

साहित्यकार डॉ. विजयानन्द राजस्थान में होंगे सम्मानित

झूंसी, प्रयागराज।हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार डॉ०विजयानन्द को उनकी कहानी ष्कहां मिली आजादी ष को अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में दूसरा श्देवगिरी साहित्य सम्मान श दौसा राजस्थान में प्रदान किया जाएगा। इसकी जानकारी संस्थाध्यक्ष डॉ०निर्मल शर्मा ने देते हुए बताया कि शीघ्र ही सभी सम्मानित साहित्यकारों से सहमति लेकर समारोह तिथि घोषित की जाएगी।

ज्ञात हो कि अभी हाल में डॉ०विजयानन्द को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का एक लाख रुपए का अखिल भारतीय कविता पुरस्कार तथा

हिंदुस्तानी एकेडेमी,प्रयागराज का दो लाख रुपए का भारतेंदु हरिश्चंद्र सम्मान प्राप्त हो चुका है। वैश्विक हिंदी महासभा, अखिल भारतीय हिंदी परिषद, भारत के लगभग सभी प्रांतों के पदाधिकारियों तथा प्रयागराज के बुद्धिजीवियों ने उन्हें इस सम्मान के लिए हार्दिक बधाई दी है। डॉ०विजयानन्द विभिन्न संस्थाओं में सचिव,महामंत्री,निदेशक–रिसर्च फाउंडेशन,सं.इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय,नई दिल्ली जैसे पदों पर कार्य कर चुके हैं तथा हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में 54 मौलिक, अनुदित,संपादित कुल 85 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने श वैश्विक साहित्य श त्रैमासिक का लगभग ११ वर्षों तक लगातार संपादन किया है। अमेरिका के रामकाव्य पीयूष, कृष्णकाव्य पीयूष सहित, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया,जापान सिंगापुर , मारीशस , मलेशिया, फिजी आदि अनेक देशों के काव्य संग्रहों,पत्र–पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। भारत के कई विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर एम०फिल, पीएचडी का शोध कार्य हो चुका / चल रहा है।वे अमेरिकन रिसर्च इंस्टीट्यूट के दो बार सलाहकार रहे।भारत सरकार,उत्तर प्रदेश सरकार सहित, देश–विदेश की अनेक संस्थाओं द्वारा अयोध्या सिंह उपाध्याय श हरिऔध श पुरस्कार (मऊ,आजमगढ़), शकुंतला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार (इलाहाबाद), सूचना प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार का सम्मान,मोहन राकेश नाटक पुरस्कार, बाल साहित्य सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ), हिंदी अकादमी,मुंबई का शिक्षारत्न सम्मान, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, अखिल भारतीय हिंदी महासभा, कर्नाटक, विश्व हिंदी महासभा, राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, विधानसभा, लखनऊ का पराग पुरस्कार, सयुक्तराष्ट्र विश्वविद्यालय, जापान, नेपाल सरकार आदि सहित कई दर्जन सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। सन् 2001 में अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट ने इन्हें अपने रिसर्च बोर्ड का सलाहकार बनाया था।जिस पद पर रहकर इन्होंने कई वर्षों तक सराहनीय कार्य किया है। वर्तमान में वे वैश्विक हिंदी महासभा के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने पर विकास प्रदर्शनी का भव्य उद्घाटन

मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी ने फीता काटकर किया शुभारंभ, लाभार्थियों को वितरित किए प्रमाण पत्र, टूलकिट और चेक

मथुरा। केंद्र सरकार के जनसेवा, सुशासन, विकास एवं जनकल्याण के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित विकास प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रदेश के गन्ना विकास एवं चीनी मिल मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी ने फीता काटकर किया। उद्घाटन के उपरांत उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई विकास प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

मंत्री ने कहा कि प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आमजन तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि पिछले 12 वर्षों में ष्सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयासष के मूल मंत्र के साथ कार्य करते हुए सरकार ने अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास पहुंचाने का प्रयास किया है।

प्रदर्शनी में बेसिक शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्यान, पंचायतीराज, उद्योग, खादी एवं ग्रामोद्योग, महिला कल्याण, समाज कल्याण, दिव्यांगजन सशक्तिकरण, पुलिस विभाग, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्वयं सहायता समूह, एक जनपद–एक उत्पाद तथा एक जिला–एक व्यंजन सहित विभिन्न विभागों ने अपनी योजनाओं और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।

मंत्री ने विभागीय स्टॉलों का अवलोकन करते हुए अधिकारियों

को निर्देश दिए कि अधिक से अधिक पात्र लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाया जाए। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों और एक जिला–एक व्यंजन के अंतर्गत प्रस्तुत व्यंजनों का स्वाद भी लिया। साथ ही जैविक खेती एवं ऑर्गेनिक उत्पादों की जानकारी लेकर किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

लाभार्थियों को मिला योजनाओं का लाभ

कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री ने विभिन्न विभागों के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र, प्रशस्ति पत्र, टूलकिट एवं चेक वितरित किए। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत सपेरा वर्ग की महिलाओं को आवास की चाबियां सौंपी गईं। स्वास्थ्य विभाग द्वारा क्षय रोगियों को पोषण पोटली वितरित की गई।

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना एवं विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र और टूलकिट प्रदान किए गए। श्रम विभाग द्वारा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को आर्थिक सहायता के चेक वितरित किए गए। वहीं बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग तथा समाज कल्याण विभाग के लाभार्थियों को भी योजना संबंधी प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

एलईडी प्रचार वाहनों को दिखाई हरी झंडी

कार्यक्रम के दौरान महापौर विनोद अग्रवाल ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की दो एलईडी प्रचार वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये प्रचार वाहन जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण कर सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार करेंगे और लोगों को जागरूक बनाएंगे।

अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि रहे मौजूद

कार्यक्रम में मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी, महापौर विनोद अग्रवाल, महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव, भाजपा जिलाध्यक्ष निर्भय पांडेय, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. पूजा गुप्ता, जिला विकास अधिकारी गरिमा खरे, परियोजना निदेशक डीआरडीए अरुण कुमार उपाध्याय सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के माध्यम से सरकार की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुंचाने और पात्र लाभार्थियों को योजनाओं से जोड़ने का संदेश दिया गया।

पर्यावरण संरक्षण और साहित्य साधना का संगम, मीरापुर में हुआ विराट कवि सम्मेलन

प्रयागराज। राही विकास समिति द्वारा पर्यावरण पखवाड़ा के अंतर्गत मीरापुर स्थित त्रिकोना पार्क में कवि सम्मेलन, सम्मान समारोह एवं गौरैया संरक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साहित्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सरोकारों का सुंदर समन्वय देखने को मिला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व न्यायाधीश सुधीर नारायण रहे, जबकि अध्यक्षता रवीन्द्र कुशवाहा ने की। विशिष्ट अतिथियों में मानवाधिकार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सतेन्द्र कुमार दुबे तथा हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व कार्यकारिणी अध्यक्ष राजेश खरे शामिल रहे।

समिति के अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष हितेश वर्मा एवं सचिव मधुसूदन निषाद ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

कवि सम्मेलन में रामलखन चौरसिया, मुक्तक सम्राट रामकैलाश पाल प्रयागी, जगदीश कौर सहित अनेक

कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ कर श्रोताओं की खूब सराहना प्राप्त की। कार्यक्रम का शानदार संचालन दोहा सम्राट पंडित राकेश मालवीय 'मुस्कान' ने किया, जबकि सरस्वती वंदना अन्नपूर्णा मालवीय ने प्रस्तुत की।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 11 महिलाओं को गौरैया के लिए विशेष घर वितरित किए गए। लाभार्थियों में पिंकी, शशि कसरवानी, राधा, सावित्री, निशा एवं कंचन निषाद सहित अन्य महिलाएं शामिल रहीं। समिति के संरक्षक दिनेश सिंह ने गौरैया घर भेंट किए।

इस अवसर पर तैराकी क्षेत्र में पिछले पांच वर्षों से यमुना नदी पार करने वाले पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों को भी मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में सत्य भारती, सावी गुप्ता, विश्वकर्मा, अदिति खन्ना, आद्या, गौरी तथा मानस निषाद को प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त न्यूज पेपर हॉक्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अविनाश शुक्ला तथा वरिष्ठ पत्रकार भोलाचंद्र अवस्थी को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष हितेश वर्मा एवं सचिव मधुसूदन निषाद ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं उपस्थितजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अधिक मास सेवा शिविर में श्रद्धालुओं की सेवा को समर्पित रहा आयोजनः सविता सिंह सौरोत

गोवर्धन, मथुरा। अधिक मास के पावन अवसर पर ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग पर आयोजित सेवा शिविर एवं भंडारे में हजारों श्रद्धालुओं ने लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि सविता सिंह सौरोत ने श्रद्धालुओं एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सेवा, संस्कार और समाज के प्रति समर्पण ही उनके जीवन की प्रेरणा है।

उन्होंने कहा कि अधिक मास के दौरान ब्रज में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस सेवा शिविर

का आयोजन किया गया है। शिविर में श्रद्धालुओं के लिए भोजन, शुद्ध पेयजल, विश्राम, स्नान तथा आवश्यक दवाइयों सहित विभिन्न सुविधाओं की व्यवस्था की गई, जिससे परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

सविता सिंह सौरोत ने कहा कि श्रद्धालुओं का स्नेह और आशीर्वाद ही उनके लिए सबसे बड़ी पूंजी है। उन्होंने प्रभु श्रीकृष्ण एवं श्री गिरिराज महाराज से प्रार्थना करते हुए कहा कि अधिक मास में ब्रज की पावन भूमि पर आने वाले सभी श्रद्धालुओं पर उनकी कृपा बनी रहे तथा उनके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हो।

उन्होंने सेवा कार्य को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी कार्यकर्ताओं, व्यवस्थापकों एवं श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया और कहा कि आप सभी का विश्वास एवं सहयोग ही ऐसे जनसेवा कार्यों के लिए निरंतर प्रेरणा देता है। इस अवसर पर उन्होंने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ का भी आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में ब्रज क्षेत्र, मथुरा, वृंदावन और गोवर्धन के विकास के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। इससे श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी तथा ब्रज की गौरवशाली पहचान और अधिक सुदृढ़ होगी। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी लोगों ने सेवा, सद्भाव और संस्कार की परंपरा को आगे बढ़ाने तथा ब्रज की महिमा को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया।

क्रिसमस रोज

हेलेबोरस नाइजर, लगते बहुत मनोज।
जिसको हेलेबोर्स कह, कहते क्रिसमस रोज।
कहते क्रिसमस रोज,कहानी मधुर सुहानी।
कन्या के थे अश्रु, फूल बन रचा कहानी।
सुन लो कहें प्रदीप, पूर्ण कर कन्या हसरत।
हैं अब सबके बीच, नाइजर हेलेबोरस।।

मिथकों के ही बीच में, हेलेबोर इतिहास।
जहरीला पौधा बना, जीत जगत विश्वास।
जीत जगत विश्वास, रूप औषधि का धरके।
पागलपन के साथ, दवा यह कृमि का बनके।
सुन लो कहें प्रदीप,फूल मोहें जब सबको।
खुलती है तब बात,,बताते हैं मिथकों के।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

डॉ. आकांक्षा पाल को मिली संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की प्रतिष्ठित जूनियर फेलोशिप

प्रयागराज। डॉ. आकांक्षा पाल को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) के क्षेत्र में संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) सीसीआरटी (ब्ब्त्ज)नई दिल्ली के द्वारा संस्कृति के क्षेत्र में प्रतिष्ठित फेलोशिप के लिए चुना गया। आपने प्रयागराज का ही नहीं बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश का मान बढ़ाया है। आपने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संगोष्ठियों में प्रतिभाग कर अपने शोध प्रपत्र प्रस्तुत किए हैं। आपके 40 से अधिक शोध प्रपत्र प्रकाशित हो चुकें हैं। आपकी 4 पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। साथ ही आप संस्कृति विभाग(उत्तर प्रदेश), संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार), दूरदर्शन एवं आकाशवाणी केन्द्र से चयनित कलाकार एवं उद्घोषिका है। इसके अतिरिक्त आपको राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत से सम्मानों से अलंकृत भी किया जा चुका है। आप कई सामाजिक व साहित्यिक संस्थाओं में भी सक्रिय भूमिका भी निभा रहीं हैं।

सीएमपी डिग्री कॉलेज में आयोजित कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में 14 विद्यार्थियों का चयन

प्रयागराजससीएमपी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज में 11 जून 2026 को कैरियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव में प्रतिष्ठित टायर निर्माण कंपनी बीकेटी टायर ग्रुप (ठज्ञज ज्लतमे ळतवनच) द्वारा रसायन विज्ञान विभाग के कुल 14 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों में बी.एससी. एवं एम.एससी. रसायन विज्ञान के विद्यार्थी शामिल हैं। यह उपलब्धि महाविद्यालय एवं रसायन विज्ञान विभाग के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। चयनित विद्यार्थियों में बी.एससी. रसायन विज्ञान के प्रवीण यादव, श्रीवेश नंदन, विष्णुकांत यादव, हिमांशु यादव, मुकेश प्रजापति, प्रियंशु यादव एवं वैभव भट्ट तथा एम.एससी. रसायन विज्ञान के दुर्गेश त्रिपाठी, अनुराग यादव, आदित्य यादव, मोहम्मद अजमल खान, लवकुश उपाध्याय, अभिषेक यादव एवं शैलेश मिश्रा शामिल हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे ने कहा कि संस्थान विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ–साथ रोजगारपरक अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कैंपस प्लेसमेंट जैसी गतिविधियां विद्यार्थियों को उद्योग जगत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कैरियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल की संयोजिका डॉ. रुचिका वर्मा, केमिस्ट्री विभाग के संयोजक डॉ. संतोष श्रीवास्तव के साथ साथ डॉ. विशाल श्रीवास्तव, डॉ. प्रवीण कुमार सिंह, डॉ. हिमानी चौरसिया ने सभी चयनित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं. CEN-2026-2 दिनांक 15.06.2026

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य (इंजी.)/निर्माण-I/उत्तर मध्य रेलवे/प्रयागराज द्वारा निम्नलिखित निर्धारित कार्य के लिये ई-निविदायें निर्धारित प्रपत्र पर दिनांक 15.07.2026 के समय 15.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदाओं का विवरण इस प्रकार है।

क्र.सं.1. निविदा नं.: CEN-2026-02

कार्य का विवरण: एरियल वीडियोग्राफी के साथ RTK&PPK सक्षम UAV/ ड्रोन का उपयोग करके चल रहे प्रयागराज जंक्शन-पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन नई तीसरी लाइन परियोजना की परियोजना निगरानी।

अनुमानित मूल्य: ₹ 8560600.00	बोली प्रतिभूमि: ₹ 171200.00

कार्य समापन की अवधि: 15 माह

निविदा बंद करने की तिथि और समय: 15.07.26 15.00 बजे

निविदा खुलने की तिथि और समय: 15.07.2026 15.30 बजे

निविदा का प्रकार: ओपेन टेण्डर (एकल पैकेट प्रणाली)

नोट- 1. उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) www.ireps.gov.in पर समय 15.00 बजे तक निविदा भरने की तिथि दिनांक 15.07.2026 तक उपलब्ध है। 2. उपरोक्त सभी निविदाओं में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिये कि वे अपने आपको I.T. Act-2000 के अन्तर्गत CCA द्वारा जारी Digital हस्ताक्षर प्रमाण पत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. बोली प्रतिभूमि या तो ई-भुगतान गेटवे के माध्यम से नकद में जमा की जाएगी या भारत के अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक से बैंक गारंटी बांड के रूप में प्रस्तुत की जाएगी या जैसा कि निविदा दस्तावेजों में उल्लेख किया गया है। बैंक गारंटी बांड निविदा दस्तावेज में दिये गये अनुलग्नक-बीआईए के अनुसार होगा और बोली वैधता अवधि से परे 60 दिनों की अवधि के लिये वैध होगा। 4. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित रेट पेज पर ही विचारणीय हैं। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फार्म/लेटर हेड पर यदि संलग्न है तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 5. निविदा की राशि 10 करोड़ से अधिक होने पर संयुक्त उद्यम (जे.वी.)/Consortiums/MOUs पर विचार किया जायेगा। 6. संलग्न किये जाने वाले सभी प्रपत्र निविदाकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिए। 7. सभी निविदाओं हेतु निविदादाता अपनी निविदा के साथ निर्धारित प्रोफार्मा पर एक प्रमाण-पत्र, जैसा निविदा प्रपत्र में उल्लिखित है, प्रस्तुत करेंगे, जिसके अभाव में उनकी निविदा अविचारणीय होगी तथा निरस्त कर दी जायेगी। 8. निविदा दस्तावेज में उल्लिखित योग्यता/मानदण्डों को पूरा करने के दावे के समर्थन में अपलोड किये गये दस्तावेजों/प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियों पृष्ठ को टेण्डरर फर्म के निविदाकार या अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा स्वयं प्रमाणित/डिजिटल हस्ताक्षरित किया जायेगा। स्वयं प्रमाणपत्र में हस्ताक्षर, मोहर और तारीख (प्रत्येक पृष्ठ पर) अंकित होनी चाहिये। केवल वे दस्तावेज जिन्हें निविदाकार द्वारा स्पष्ट रूप से घोषित किया गया है कि निर्धारित पात्रता मानदण्डों की अर्हता प्राप्त करने के दावे का समर्थन करने वाले दस्तावेज को ही उनकी निविदा का मूल्यांकन करने के लिये विचार किया जायेगा। निविदाकार द्वारा दी गयी किसी भी गलत जानकारी के मामले में अनुबन्ध समाप्त कर दिया जायेगा एवं बोली प्रतिभूमि, परफारमेंस गारण्टी और सिक्योरिटी डिपाजिट जब्त कर ली जायेगी और भारतीय रेलवे में एजेंसी पर 5 (पाँच) वर्ष तक कोई भी व्यवसाय करने का प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा। 9. सरकारी अधिकारियों द्वारा समय-समय पर जारी जी.एस.टी. अधिनियम और सरकार/सम्बन्धित प्राधिकरण द्वारा समय-समय पर जारी किये गये नियम लागू होंगे। 10. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 11. निविदा ऑनलाइन दिनांक 15.07.2026 को समय 15.00 बजे तक सबमिट किया जा सकता है तथा निविदा 15.30 बजे दिनांक 15.07.2026 खोली जायेगी।

1359/26 FA

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

ईमानदारी की लेबलिंग

भारत में सामान्यतः उत्पादों पर गुणवत्ता व उपयोग–तिथि के दावों के बावजूद उसमें सामान के सेहत से जुड़े सरोकार सवालों के घेरे में रहे हैं। यह आम धारणा बनी हुई है कि कुछ लोग मुनाफे के लिए सामान की एक्सपाइरी डेट दर्ज करने में हेरफेर करने तक से नहीं चूकते। यह भी विश्वास से नहीं कहा जा सकता है कि सामान में शामिल घटकों का विवरण ईमानदारी से लेबल पर दर्ज किया गया हो। गाहे–बगाहे मीडिया व उपभोक्ता अदालतों में ऐसे मामलों की गूंज रहती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से संवेदनशील लोगों के जीवन पर सही लेबलिंग से आंच नहीं आ सकती। इसी के मद्देनजर भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण यानी एफ.एस.एस.ए.आई. द्वारा कई खाद्य कंपनियों को गुमराह करने वाले ट्रेड नाम के इस्तेमाल और सेहत से जुड़े दावों के लिए नोटिस जारी करना, निश्चय ही एक स्वागतयोग्य कदम है। अक्सर प्रतिष्ठित उत्पाद वाली कंपनियों के लेबल लगाकर हल्के सामान बेचने के मामले भी उजागर होते हैं। हकीकत है कि आकर्षक पैकेजिंग के जरिये उत्पाद की न्यूट्रिशन से जुड़ी जानकारी को पार्श्व में डाल दिया जाता है। विडंबना यह है कि देश में ऐसा नियामक तंत्र विकसित नहीं हो पाया है जो लगातार जनहित में खाद्य उत्पादों की जांच–पड़ताल कर सके। निश्चित रूप से रेगुलेटरी संस्था की निगरानी सिर्फ कभी–कभार नोटिस जारी करने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इस तरह की कार्रवाई कुछ समय के लिए तो सुर्खियां बनती हैं लेकिन फिर लोगों को इसकी याद कम ही रह जाती है। इस तरह की पहल को ग्राहकों की सुरक्षा में पारदर्शिता, जवाबदेही और जागरूकता पर आधारित लगातार चलने वाले एक राष्ट्रीय मिशन का रूप दिया जा सकता है। निश्चित रूप से लाखों भारतीयों के लिए खाने की चीजों पर लेबलिंग सेहत से जुड़ा मामला है। मसलन कशेरुक रोग से पीड़ित लोग ग्लूटेन से बचने के लिए लेबलिंग पर लिखी जानकारी पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि यह उनकी आंतों को नुकसान पहुंचा सकता है। निस्संदेह, कई एलर्जी व रोगों से जूझने वाले लोगों को कुछ उत्पादों में मौजूद पदार्थों की वजह से लंबे समय तक रहने वाली परेशानियां हो सकती हैं। लेकिन विडंबना यह है कि उत्पादों के लेबल पर आधी–अधूरी, अस्पष्ट जानकारी ही दी जाती है। अक्सर उत्पादों पर हेल्दी, नेचुरल और आयुर्वेद पद्धति पर आधारित जैसे लुभावने शब्दों का इस्तेमाल करके ग्राहकों को भ्रमित किया जाता है, जिससे उपभोक्ता असमंजस की स्थिति में पड़ आते हैं। मधुमेह, एलर्जी और खानपान से जुड़े दूसरे परहेजों में अस्पष्ट व गलत जानकारी हानिकारक हो सकती है। उत्पादकों की ईमानदारी व उत्पाद की गुणवत्ता को लेकर भरोसा करना ग्राहकों के लिए मुश्किल हो जाता है। जैसे–जैसे भारतीय समाज में पैकेट बंद खाद्य पदार्थों का प्रचलन तेजी से बढ़ा है, देश में एक मजबूत नियामक ढांचे की सख्त आवश्यकता महसूस की जा रही है। दरअसल, देखने में आता है कि छोटे दुकानदार अपने नुकसान को बचाने के लिए उसका बोझ ग्राहकों पर डाल देते हैं। एक प्रतिबद्ध नैतिकता का अभाव इस मुनाफे के कारोबार में अक्सर नजर आता है। निस्संदेह, किसी उत्पाद के पैकेट में उल्लेखित जानकारी ग्राहक के समझने के लिए आसान होनी चाहिए। साथ ही बिना तथ्य व तार्किकता के सेहत से जुड़े दावे करने वाले उत्पादकों की जवाबदेही भी तय की जानी चाहिए। इसके लिये जरूरी है कि समय–समय पर इन उत्पादों की उत्पादन प्रक्रिया की औचक निगरानी व पड़ताल होनी चाहिए। साथ ही बार–बार नियम तोड़ने पर कड़े जुर्माने का प्रावधान भी होना जरूरी है। देश में कोशिश हो कि उपभोक्ता जागरूकता अभियान को सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति का हिस्सा बनाया जाए। इस अभियान में स्कूलों, हेल्थकेयर संस्थानों और विभिन्न मीडिया समूहों को आम लोगों का मार्गदर्शन करना चाहिए कि किसी उत्पाद में दर्ज न्यूट्रिशन लेबल को कैसे समझें। कैसे भ्रमित करने वाले दावों की पड़ताल करें। साथ ही कैसे वे सेहत के अनुकूल उत्पादों के विकल्प का चयन कर सकें। निश्चित रूप से एक जागरूक उपभोक्ता ही अनैतिक मार्केटिंग के खिलाफ बचाव की राह दिखा सकता है। खाद्य उत्पाद से जुड़े कारोबारियों को कानून के बजाय नैतिक दायित्वों के निर्वहन से कारोबार में शुचिता को बनाये रखनी चाहिए।

संवैधानिक संस्थाओं की भूमिका और विपक्ष की चुनौतिया

राजेश पांडेय

भारत में केंद्र और राज्य की सरकारें वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी जाती हैं। शहर से लेकर गांवों तक लोग अपने प्रतिनिधि का चुनाव वोट से करते हैं। सभी चुनावों में स्थानीय स्तर पर हेराफेरी की घटनाएं होती हैं। मतदान केंद्रों पर कब्जा, फर्जी वोटिंग, मतगणना में गड़बड़ी जैसे मामले सामने आते हैं। फिर भी, राष्ट्रीय स्तर पर चुनावों की शुद्धता और पवित्रता संदेह से परे रहती थी। लेकिन अब स्थिति बदल गई है। पहले वोटर सरकार चुनते थे, अब सत्ताधारी पार्टी तय कर रही है कि वोटर कौन रहेगा और कौन नहीं। कम से कम मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया से तो यही तस्वीर उभरती है। धांधली के आरोपों, विसंगतियों और खामियों की कहीं सुनवाई नहीं है। संवैधानिक संस्थाओं से इंसाफ की उम्मीद खत्म होती जा रही है। स्वस्थ और सच्चे लोकतंत्र की पहली शर्त स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हैं। अब इसकी गारंटी नहीं रही। चुनावों में गड़बड़ी के आरोपों की सूची दिन–ब–दिन लंबी हो रही है। हम दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने पर गर्व करते हैं लेकिन हकीकत एकदम अलग है। स्वयंसेवी संगठनों– एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और महाराष्ट्र स्थित वोट फॉर डेमोक्रेसी ने 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों में कई विसंगतियों का जिक्र किया है। दोनों चुनावों में कुल मतदान और गिने गए वोटों की संख्या में अंतर पाया गया है। वोटिंग के आंकड़े काफी विलंब से जारी हो रहे हैं। वोटिंग के आखिरी घंटों में वोटरों की संख्या में भारी बढ़ोतरी चिंताजनक और अविश्वसनीय है। एडीआर ने चुनाव आयोग को कई मौकों पर पत्र लिखकर सभी पहलुओं की ओर उसका ध्यान आकर्षित कराया है। लेकिन संतोषजनक जवाब नहीं मिले हैं। चुनाव आयोग की मनमानी पर कोई अंकुश नहीं है। इसका असर हर जगह दिखाई पड़ रहा है। आम चुनाव के साथ विधानसभा चुनाव भी संदेह के दायरे में हैं। महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिम बंगाल विधानसभा के चुनाव में इसके सबूत मिले हैं। अपेक्षाकृत महत्वहीन चुनाव तक धांधली की चपेट में आ रहे हैं। चंडीगढ़ मेयर के चुनाव में निर्वाचन अधिकारी गड़बड़ी करते रंगे हाथों पकड़े जा चुके हैं। मध्यप्रदेश में राज्यसभा की एक सीट के लिए कांग्रेस प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन का नामांकन पत्र खारिज करने की ताजा घटना इसकी अगली कड़ी है। यह मामला सुप्रीम कोर्ट में है। देश की सर्वोच्च अदालत से अनियमितताओं को रोकने की उम्मीद की जाती है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को अहम मामलों में क्लीन चिट दे दी है। खासतौर से एसआईआर को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर 27 मई को आए कोर्ट के फैसले में वोटरों के अधिकारों की रक्षा की फिक्र दिखाई नहीं देती है। कोर्ट ने कहा है कि चुनाव आयोग को एसआईआर कराने का संवैधानिक और कानूनी अधिकार है। अदालत ने यह जरूर माना है कि आयोग नागरिकता तय नहीं कर सकता है। यह केंद्र सरकार का काम है। फिर भी, एसआईआर की जटिलता और खामियों पर उसने गौर नहीं किया है। सुप्रीम कोर्ट ने विधानसभा चुनावों से पहले कुछ राज्यों में हड़बड़ी में कराई गई प्रक्रिया के बारे में कुछ नहीं कहा है। आयोग को किसी बिंदु पर जवाबदेह नहीं ठहराया है। अब तक मतदाता सूची में वोटरों का नाम दर्ज करने और हटाने की प्रक्रिया पारदर्शी और आसान रही है। हर साल वोटर लिस्ट का संक्षिप्त संशोधन (समरी रिवीजन) होता है। चुनाव आयोग 18 साल से अधिक आयु के नए वोटरों को शामिल करने के लिए अभियान चलाता है। लेकिन लगता है कि एसआईआर के जरिये नाम शामिल करने के बदले हटाने की मुहिम चलाई गई है। लगातार खबरें आ रही हैं कि सबसे अधिक नाम अल्पसंख्यकों, दलितों के हटाए गए हैं। दरअसल, भारत में ऐसे लोगों की संख्या बहुत बड़ी है जिनके पास कई जरूरी दस्तावेज नहीं हैं। इनमें अधिकतर लोग कमजोर और गरीब हैं। भला सोचिए दूरदराज के कस्बों, गांवों में बैठे लोगों के लिए दस्तावेज जुटाना कितना कठिन है। गनीमत है कि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर के जरूरी दस्तावेजों में आधार कार्ड को शामिल कराया है। अनुमान है, 2026 के शुरुआती महीनों में 134 करोड़ लोग आधार का उपयोग कर रहे थे। चुनाव आयोग का काम स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना है। उसे सुनिश्चित करना है कि कोई पात्र वोटर मताधिकार के इस्तेमाल से वंचित न रह जाए। लेकिन यहां उल्टा हो रहा है। एसआईआर के तहत करोड़ों वोटरों को मतदाता सूची से बाहर करने का अभियान चल रहा है। कुछ विशेषज्ञों के अनुमानों में यह संख्या लगभग साढ़े छह करोड़ बताई गई है। पश्चिम बंगाल में अप्रैल, मई में हुए विधानसभा चुनाव में तार्किक विसंगति जैसे नए मापदंड के तहत 27 लाख वोटरों का मताधिकार छीन लिया गया। तमिलनाडु में 97 लाख लोग बाहर हुए हैं। बिहार में 25 लाख वोटरों को जगह नहीं मिली है। सबसे अधिक लोकसभा सीटों के राज्य उत्तरप्रदेश में एक करोड़ से अधिक वोटर अधर में हैं। जाहिर है, ये हालात लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं हैं। संवैधानिक संस्थाओं की चुप्पी के कारण चुनावों में मुकाबला बराबरी का नहीं रह गया है। दौड़ शुरू होने से पहले ही सत्ताधारी दल निर्णायक बढ़त की स्थिति में रहने लगा है। ऐसी स्थिति में विपक्षी दलों के सामने कठिन चुनौतियां हैं। उसके अपने विरोधाभास और मतभेद अलग हैं। कई राज्यों में उनके हित आपस में टकराते हैं। 2023 में बने इंडिया गठबंधन के सदस्य कई मौकों पर अलग दिशाओं में चलते हैं। लेकिन उसने इस वक्त एसआईआर के खिलाफ एकजुटता दिखाई है। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद 8 जून को हुई उसकी बैठक में आम राय से एसआईआर को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने का इरादा जताया गया है। विपक्ष का कहना है कि एसआईआर का उपयोग चुनाव नतीजों को प्रभावित करने के लिए किया जा रहा है। बैठक में चिंता व्यक्त की गई कि एसआईआर से मतदाता सूचियों में गड़बड़ी करके बड़े पैमाने पर लोगों को मताधिकार से वंचित किया जा रहा है। इसने चुनावों की निष्पक्षता और पवित्रता पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। एसआईआर के बारे में विपक्ष के सवाल जायज हैं। इसके बावजूद एसआईआर को नए सिरे से कानूनी चुनौती देने के नतीजों पर फिलहाल कुछ कहना मुश्किल है। कानूनी रास्ते तो ठीक हैं पर विपक्ष के लिए मैदानी मोर्चे को संभालना ज्यादा जरूरी है। 8 जून की बैठक में गठबंधन के मतभेद भी सामने आए हैं। सहयोगी दलों ने कहा कि तमिलनाडु, केरल और पश्चिम बंगाल में कांग्रेस की रणनीति ने गठबंधन के प्रमुख सहयोगियों द्रमुक, तृणमूल कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को नुकसान पहुंचाया है।

जिबह किया जाता जनतंत्र!

राजेंद्र शर्मा

अपनी बंगाल फतेह को विधानसभा से आगे ले जाने और वास्तव में सीधे लोकसभा फतेह तक पहुंचाने में, मोदीशाही को जरा भी देर नहीं लगी है। 4 मई को विधानसभा चुनाव में बंगाल में उसकी जीत का ऐलान हुआ और इसके मुश्किल से एक महीना दस दिन बाद, 14 जून को काकोली घोष दस्तीदार के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस के लोकसभा ग्रुप के बागी सदस्यों ने, स्पीकर ओम बिड़ला से मुलाकात की और बागी गुट के उन्नीस–बीस सांसदों के हस्ताक्षरों के साथ एक ज्ञापन देकर, लोकसभा में तृणमूल कांग्रेस ग्रुप से अलग बैठाए जाने की मांग की। पर तृणमूल कांग्रेस के ममता वफादार गुट द्वारा इससे पहले ही स्पीकर से मुलाकात कर, उन्हें याद दिलाया जा चुका था कि दल–बदलविरोधी कानून के अनुसार और खासतौर पर शिव सेना के विभाजन के प्रकरण में 2022 में सुप्रीम कोर्ट के सीमित निर्णय के अनुसार, तृणमूल के बागी गुट को लोकसभा में एक अलग गुट के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती है। कानून के जानकारों के अनुसार, किसी राजनीतिक पार्टी के विधायी दल के दो–तिहाई सदस्यों के अलग होने की सूरत में भी, उन्हें दलबदल–विरोधी कानून के अंतर्गत अयोग्यता से तभी सुरक्षा मिल सकती है, जब मूल पार्टी का किसी अन्य राजनीतिक पार्टी में विलय हो रहा हो या उनके विलय से कोई नयी पार्टी बन रही हो। शिव सेना प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट ने पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया था कि यहां विलय से आशय राजनीतिक पार्टी के विलय से है, न कि विधायी ग्रुप के दो–तिहाई या उससे अधिक के विलय से। बहरहाल, दल–बदल विरोधी कानून के प्रावधान, बागी तृणमूल सांसदों के कदमों को और सच पूछें तो उनके पीछे आधे प्रकट तथा आधे परोक्ष रूप से काम कर रहे संघी–भाजपायी श्चाणक्योंश के कदमों को नहीं रोक सकते थे, नहीं रोक पाये। बेशक, यह कोई संयोग ही नहीं था कि स्पीकर ओम बिड़ला से मुलाकात की बागी गुट की कार्यनीति, इस मुलाकात से ठीक पहले हुई केंद्र सरकार के मंत्री, भूपेंद्र यादव के घर पर बैठक में तैयार की गयी थी। बिड़ला से मुलाकात के बाद, बागी गुट के प्रवक्ताओं ने दो महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। पहली, जो कि इस गुट के खड़े किए जाने तथा उसके लिए दो–तिहाई का आंकड़ा जुटाए जाने की कसरत शुरू होने के बाद से ही स्पष्टङ्क थीकृयह गुट नरेंद्र मोदी सरकार के हाथ मजबूत करेगा और इस तरह कथित रूप से अपने चुनाव क्षेत्रों के विकास का रास्ता बनाने के लिए करेगा। दूसरी घोषणा थी, बागी गुट के एनसीपीआई में विलय के निर्णय की। जाहिर है कि इस गुट द्वारा इस फैसले की जानकारी, लोकसभा स्पीकर को भी दी गयी थी। समझना मुश्किल नहीं था कि इस पैंतरे का मकसद, कम से कम कागजी तौर पर दलबदल–विरोधी कानून की, टूटने वाले गुट के किसी अन्य पार्टी में विलय की शर्त पूरी करना है। काफी खोज–बीन करने पर पता चला कि नेशनलिस्ट सिटीजन्स पार्टी ऑफ इंडिया (एनसीपीआई) तीन–चार साल पहले त्रिपुरा में बनायी गयी, एक गैर–मान्यताप्राप्त किंतु रजिस्टर्ड पार्टी है, जिसका पिछले विधानसभा चुनाव में त्रिपुरा में तीन सीटों पर उम्मीदवार खड़े कर 800 वोट हासिल करने से ज्यादा कोई विधायी अस्तित्व नहीं था। अचानक यह अनाम पार्टी 20 लोकसभा सदस्यों के साथ, चौथी सबसे बड़ी पार्टी बनने जा रही है! यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि कथित विलय ऐसी अनाम पार्टी में ही क्यों, खुद भाजपा में क्यों नहीं? बेशक, एक किस्त में इतनी बड़ी संख्या में तो नहीं, फिर भी विपक्षी पार्टियों के सांसदों को भाजपा में मिलाने का खेल, मोदी निजाम के लिए कोई नया नहीं है। विधानसभा चुनावों के हालिया चक्र से जरा सा पहले ही, आम आदमी पार्टी के सात राज्यसभा सदस्यों को, इसी तरह बागी बनवा कर भाजपा में शामिल किया गया था। सात की ही संख्या इसलिए कि राज्यसभा में आप पार्टी के कुल 10 सदस्य थे और 7 सदस्यों से दो–तिहाई की शर्त पूरी हो जाती है। इससे पहले, 2019 के विधानसभा तथा लोकसभा चुनाव में तेलुगू देशमङ्क की हार के बाद, उसके चार राज्यसभा सदस्यों का भी इसी तरह से भाजपा में विलय कराया गया था। तब बागी तृणमूल सांसदों का सीधे भाजपा में ही विलय क्यों नहीं, जबकि इतना तो साफ ही है कि इस गुट को, भाजपा के पुछल्ले के रूप में काम करने के लिए ही तोड़ा गया है। इसके तीन कारण हो सकते हैं, जो सभी एक साथ भी मौजूद हो सकते हैं। पहला यह कि चुनाव आयोग की भांति–भांति की मदद के अलावा, जिस तृणमूल के भ्रष्टाचार से लेकर हिंसा तक के आख्यानों के सहारे, संघ–भाजपा ने चुनावी फतेह हासिल की है, उसके सांसदों और खासतौर पर लोकसभा सदस्यों को थोक के भाव भाजपा में लाकर पचा पाना, संघ–भाजपा के जबर्दस्त हाजमे के लिए भी मुश्किल हो सकता है। हरेक तृणमूल लोकसभा सदस्य, जिस भाजपा उम्मीदवार को हराकर लोकसभा पहुंचा है, उसके साथ एक ही पार्टी में आसानी से तो एडजस्ट नहीं ही हो सकता है। इससे कहीं बेहतर विकल्प यह होगा कि सुरक्षित दूरी रखकर, संघ–भाजपा बाद में छांट–छांटकर अपने लिए विशेष उपयोगी नेताओं को अपने साथ मिला ले और बाकी को कूड़ेदान में जाने दे। दूसरे, संसद में संख्याबल बढ़ाने के अलावा तृणमूल के लोकसभा सदस्यों का जनसमर्थन का दायरा बढ़ाने में अगर कोई उपयोग हो, तो शायद ज्यादा उपयोग उनके भाजपा से सुरक्षित दूरी बनाए रखने में ही हो। और तीसरा यह कि भाजपा को बखूबी पता है कि इस तरह का विलय, राजनीतिक ही नहीं कानूनी तौर पर भी विवादास्पद होगा और उसे अदालतों में चुनौती दिया जाना तय है। ऐसे में वह अपने हाथ मैले क्यों करती, जबकि अपने पाले में करीब बीस सांसद बढ़ाने के सारे लाभ उसे, तृणमूली बागियों के एनसीपीआई सदस्य कहलाने पर भी मिल ही रहे होंगे। बेशक, तृणमूली बागी सांसद चाहे ओम बिड़ला के फैसले के बाद, अलग गुट के तौर पर मान्यता प्राप्त कर लें या एनसीपीआई के लोकसभा ग्रुप की मान्यता प्राप्त कर लें, ऐसा कोई भी फैसला विवादास्पद होगा और ज्यादा संभावना है कि उसे अदालत में चुनौती भी दी जाए। लेकिन, महाराष्ट्र में पहले शिव सेना तथा उसके बाद एनसीपी के विभाजन के प्रकरण और अभी हाल में आप पार्टी राज्यसभा सदस्यों के भाजपा के विलय को दी गयी चुनौतियों के अनुभव से यह साफ है कि व्यावहारिक रूप से, स्पीकर के फैसले से बनने वाली स्थिति, जल्दी से बदलने वाली नहीं है। मोदीशाही के जरिए जो संघ–भाजपा तंत्र साम–दाम–दंड–भेद के अपने हथियारों से, अपने विरोध में खड़ी पार्टियों का और खासतौर पर उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों का इस तरह का विभाजन सुनिश्चित करता है, वही संघ–भाजपा तंत्र पहले ही यह भी सुनिश्चित कर चुका होता है कि उसके लिए फायदे के इस तरह के घटनाक्रम में कोई अन्य संस्था बाधा नहीं डाले। उसे पलटा तो हर्गिज नहीं जाए। जाहिर है कि बारह वर्ष के अनुभव ने उसके इस भरोसे को पुख्ता ही किया है कि जनतंत्र की कोई भी संस्था, उनके मंसूबों के आड़े आने लायक नहीं रही है। जाहिर है कि विधानसभा चुनाव के हालिया चक्र के नतीजों से और खासतौर पर बंगाल फतेह करने के बाद से, मोदीशाही के हौसले सातवें आसमान पर हैं। इसीलिए, तृणमूल लोकसभा सांसदों के मामले को, मोदीशाही की अपनी बंगाल की फतेह का संसद का विस्तार करने की मुहिम तक ही सीमित कर के नहीं देखा जाना चाहिए। महाराष्ट्र की राजनीति के जानकारों के अनुसार, तृणमूल सांसदों की बगावत संगठित करने के दौरान ही, संघ–भाजपा के खिलाड़ी महाराष्ट्र में भी विभाजन के पिछले चक्र के जरिए पहले ही बहुत कमजोर किए जा चुके विपक्ष में, विभाजन के एक और चक्र की तैयारियों में जुटे हुए थे। उद्घव ठाकरे की शिव सेना खासतौर पर उनके निशाने पर थी, जिसके अब सिर्फ 9 लोकसभा सदस्य बचे हैं। यह दूसरी बात है कि सारी कोशिशों के बावजूद, संघ–भाजपा के हथियार के तौर पर शिंदे के लिए, छः (यानी दो–तिहाई) बागी जुटाना संभव नहीं हुआ, जो कि दलबदल कानून के चाबुक से बचने के लिए जरूरी संख्या थी। इसे देखते हुए, हैरानी की बात नहीं होगी कि कई राजनीतिक टीकाकारों का यह अनुमान सच निकले कि मोदीशाही, संसद के मानसून सत्र में दोबारा, महिला आरक्षण सह परिसीमन विधेयक का पैकेज देश के सिर पर थोपने की कोशिश कर सकती है। संसद में अपना संख्या बल बढ़ाने के इस जुनून के पीछे ऐसा ही कोई गहरा मकसद नजर आता है। यह किसी से छुपा नहीं है कि महिला आरक्षण की आड़ लेकर, परिसीमन को आगे बढ़ाने में ही मोदीशाही की असली दिलचस्पी है। और यह इसलिए है कि उसने समझ लिया है कि जनसंख्या अनुपात पर आधारित परिसीमन के जरिए, उत्तरी तथा पश्चिमी भारत के अपने गढ़ों का तुलनीय राजनीतिक वजन और बढ़ाने के जरिए ही, वह 2029 के चुनाव में अपनी जीत पक्की कर सकती है।

लोकतांत्रिक गिरावट की पराकाष्ठा

वैसे तो 2014 में सत्ता में आई भारतीय जनता पार्टी लोकतंत्र को लगातार गर्त में ले जा रही है, परन्तु पश्चिम बंगाल में वहां की सत्ता से हट गयी तृणमूल कांग्रेस पार्टी को रातों–रात तोड़कर उसका जो हश्र किया गया है, वह शायद गिरावट का सबसे निचला स्तर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में अनेक ऐसे कारनामे किये गये हैं जो लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गयी किसी सरकार के लिये बहुत शर्मनाक है। इस बात का लम्बा हिसाब लगाया जा सकता है कि केन्द्र सरकार में आने के बाद अपनी जांच एजेंसियों, अलग–अलग ढंग से जुटाये गये पैसों और बेहिचक गैर–लोकतांत्रिक तरीके अपनाते हुए भाजपा ने कई राज्यों में गैरभाजपा सरकारों में तोड़–फोड़ की, अनैतिक तरीकों से केन्द्र के अधीन मौजूद ताकत का बेजा इस्तेमाल करते हुए भारतीय लोकतंत्र की नींव को हिलाकर रख दिया है। वैसे तो प. बंगाल में भाजपा बड़े अंतर से न केवल जीती वरन सरकार बनाने के लिये उसके पास साफ बहुमत भी उपलब्ध हो गया है। ऐसे में सवाल हो सकता है कि इसके बावजूद टीएमसी को संसद में तोड़ने की जरूरत है? यह अन्य दलों को साफ संकेत हैं कि आगे जाकर उनका भी यही हश्र होगा। इसे अगले वर्ष होने जा रहे उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों से भी जोड़ा जा रहा है। यह भी साफ हो गया है कि भाजपा अब न केवल विपक्षी दलों को तोड़ेगी वरन हर पार्टी के कथित बागी उम्मीदवारों को निर्दिष्ट भी करेगी कि उन्हें फिलहाल किस दल में शामिल होना है। अब तक तो यही होता आया है कि अपनी पार्टी को किसी भय या लालच के चलते छोड़ने वाले विधायक या सांसद सीधे भाजपा का रुख करते थे। चाणक्यगिरी का सम्भवतरू यह नवाचार है कि टीएमसी के बागी 19–20 सांसदों को कुछ वक्त पहले हावड़ा में बनी और त्रिपुरा में चुनाव लड़ने वाली नेशनलिस्ट सिटीजंस पार्टी ऑफ इंडिया (एनसीपीआई) में शामिल होने के लिये कहा गया। इस घटनाक्रम से एनसीपीआई का नाम लोग जान पाये हैं। राज्य में वह भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए का घटक दल है। हालांकि इसकी संस्थापक अध्यक्ष शिवली कुंडू और संगठन सचिव शांतनु डे का कहना है कि इसकी जानकारी उन्हें सोशल मीडिया के जरिये मिली। वैसे शिवली का कहना है कि काफी अरसा पहले वे इस पद को छोड़ चुकी हैं तथा अब उसका अध्यक्ष कौन है– वे नहीं जानतीं। हालांकि शांतनु ने टीएमसी से आने वाले बागी सदस्यों का अपनी पार्टी में स्वागत किया है। अगर एनसीपीआई की राजनीतिक ताकत की बात करें तो इस दल के केवल दो सदस्यों ने 2023 के विधानसभा चुनाव में भागीदारी की थी। दोनों को मिलाकर कुल 822 वोट मिले थे। स्वाभाविकतरू उसके किसी भी सदस्य को विधानसभा में प्रवेश नहीं मिला था। दोनों की जमानत जब्त हो गयी थी। कल्पना कीजिये भारतीय लोकतंत्र की विद्रूपता का जहां ऐसी पार्टी के 19–20 लोकसभा सदस्य हैं जिसे कुल प्राप्त मतों की संख्या तिहाई में सिमटी हुई है। जैसा अक्सर कहा जाता है कि किसी पार्टी को छप्पर फाड़ पैसे या वोट मिलते हैं, एनसीपीआई के बारे में कहा जा सकता है कि उसे छप्पर फाड़ सांसद मिले हैं। शायद अपनी राजनीति के बल पर उसे यह उपलब्धि कभी हासिल नहीं हो सकती थी। बस, यही वह श्चाणक्यगिरीश है जो देश के लोकतंत्र को मटियामेट कर रही है। टीएमसी के सदस्यों पर गाज गिरेगी– यह तो पहले से ही तय था। इन ज्यादातर सांसदों में बेहद तेज–तर्रार लोग हैं जिनके पिछले एक या दो कार्यकाल बेहद उपयोगी रहे हैं। वे न सिर्फ जनता की आवाज उठाते थे, बल्कि वे सशक्त प्रतिरोध के सच्चे प्रतिनिधि लगते थे। विपक्षी दलों की कम संख्या के बावजूद टीएमसी के कई सदस्यों की ओर पूरा देश आशा भरी निगाहों से देखा करता था। ममता के खुद का विधानसभा चुनाव हारने के बाद यहां तक कहा जाने लगा था कि सायोनी घोष पार्टी की भावी नेता हैं। उनसे उम्मीद थी कि ममता की तरह न केवल उनकी आक्रामकता बरकरार रहेगी बल्कि वे टीएमसी की धार को और चमकाएंगी। मजेदार यह है कि जिस धर्मनिरपेक्ष चरित्र व विश्वासों के चलते ममता ने तीन मुस्लिमों को सांसद बनाया था, वे भी एनसीपीआई का दामन थाम चुके हैं। इन सभी लोगों ने विधानसभा अध्यक्ष ओम बिरला से दिल्ली जाकर न केवल खुद को टीएमसी से अलग होने की घोषणा की, वरन सदन में अलग बैठने की भी मांग की है। कहना न होगा कि ऐसे मामलों में बिरला वही फैसला करते हैं जो भाजपा के अनुकूल होते हैं। एक–दो दिनों में शायद इसकी विधिवत घोषणा भी हो जाये– मोदी–शाह की मंशा व निर्देशों के अनुकूल। टीएमसी के थोड़े–बहुत बचे हुए लोगों को डराने के लिये प.बंगाल की नयी भाजपा सरकार कोई कसर नहीं छोड़ रही है। चुनावी नतीजों की रात को टीएमसी, कांग्रेस व साम्यवादी दलों के दफ्तरों को जलाया गया, सांसदों के घरों में जांच एजेंसियों की छापेमारी जारी है, फाल्टा से हारने वाले जहांगीर खान को पुलिस उनके क्षेत्र में सरेआम परेड करा रही है तो ये बचे–खुचों को एनसीपीआई में शामिल होने का संदेश है। भाजपा जो करेगी वह करेगी ही, इंडिया गठबन्धन से न जुड़ने अथवा मिल–जुलकर चुनाव न लड़ने का भारी खामियाजा टीएमसी को भुगतना पड़ा है। यह संदेश सभी विपक्षी दलों के लिये है।

संचिता उगले की मौत के बाद बड़ा खुलासा, दोस्त बोलीं- `वो महीनों से जीना नहीं चाहती थीं'

> गीतांजलि ने उन अफवाहों को भी खारिज किया, जिनमें कहा जा रहा था कि संचिता का प्रोडक्शन हाउस से कोई विवाद हुआ था। उन्होंने बताया कि प्रोडक्शन टीम ने उनकी हालत समझने के लिए उन्हें कई डॉक्टरों के पास भी ले जाया था।

22 साल की एक्ट्रेस संचिता उगले की अचानक मौत के कुछ दिनों बाद उनकी दोस्त गीतांजलि ने चौंकाने वाली बातें सामने रखी हैं। उन्होंने बताया कि संचिता कई महीनों से बार–बार अपनी जिंदगी खत्म करने की बात कर रही थी। गीतांजलि ने टेली इंडिया टॉक से बातचीत में कहा, 'अगर कोई इंसान बार–बार कहे कि वो मरना चाहता है, तो ये अचानक नहीं होता। पिछले 6 महीनों से वो यही कह रही थी कि वो जीना नहीं चाहती।' गीतांजलि के मुताबिक, संचिता इस साल की शुरुआत से ही डिप्रेशन से गुजर रही थीं। उन्होंने कहा, 'वो डिप्रेस्ड थी, ये सब शायद जनवरी से शुरू हुआ था। कभी–कभी वो लगातार 5 दिन तक बिना सोए रहती थी।' गीतांजलि ने बताया कि संचिता किसी गहरे मानसिक तनाव (ट्रॉमा) से भी जूझ रही थी। यहां तक कि लीड रोल मिलने के बावजूद उनका काम में मन नहीं लग रहा था। गुजरात में शूटिंग से लौटने के बाद संचिता ने उनसे कहा था, 'मेरा दिल इसमें नहीं लग रहा है।' जब गीतांजलि ने उन्हें समझाने की कोशिश की, तो संचिता ने जवाब दिया, 'मुझे किसी चीज में अच्छा नहीं लगता। ये कैसी जिंदगी है? मुझे बहुत तकलीफ होती है।' गीतांजलि ने उन अफवाहों को भी खारिज किया, जिनमें कहा जा रहा था कि संचिता का प्रोडक्शन हाउस से कोई विवाद हुआ था। उन्होंने बताया कि प्रोडक्शन टीम ने उनकी हालत समझने के लिए उन्हें कई डॉक्टरों के पास भी ले जाया था। गीतांजलि की ये बातें संचिता के पिता के बयान से भी मेल खाती हैं, जिन्होंने कहा था कि उनकी बेटी डिप्रेशन से जूझ रही थी। खबरों के मुताबिक, 14 जून की शाम 7 से 7:30 बजे के बीच यह घटना नालासोपारा ईस्ट के आचोले गांव स्थित साई संतोषी बिल्डिंग में हुई। पुलिस के अनुसार, संचिता अपने कमरे में साड़ी के सहारे पंखे से लटकी हुई मिलीं। कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था। परिवार वाले तुरंत उन्हें अस्पताल लेकर गए, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। 15 जून को उनके पिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज किया है और फिलहाल इस पूरे मामले की जांच जारी है। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आखिर इस कदम के पीछे की असली वजह क्या थी।

लग्जरी लाइफ जीती हैं उर्मिला मातोंडकर, जानिए कहां से होती है कमाई और कितनी है उनकी संपत्ति

बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्रियों में से एक हैं और उन्हें प्यार से रंगीला गर्ल कहा जाता है। अपनी शानदार एक्टिंग के साथ–साथ उर्मिला अपनी आलीशान और लग्जरी लाइफस्टाइल को लेकर भी अक्सर चर्चा में रहती हैं। आइए जानते हैं कि एक्ट्रेस के पास कितनी संपत्ति है और उनकी कमाई का प्रमुख स्त्रोत्र क्या हैं ? रिपोर्ट्स के अनुसार, बॉलीवुड की मशहूर एक्ट्रेस उर्मिला की नेटवर्थ कम से कम 68.28 करोड़ है। साल 2019 में चुनवी हलफनामे के दौरान उमरीला ने अपनी सम्पति से जुड़ी कई जानकारियां साझा की थीं। उन्होंने बताया था कि उनके पास 1.27 करोड़ रुपये की हीरे की ज्वेलरी है। इसके अलावा उमरीला के पास 1.48 रुपए मूल्य के सोने के सिक्के और करीब 17.65 लाख रुपये की गोल्ड जूलरी भी मौजूद है। आपको बता दें कि उर्मिला के पास बहुत सी प्रॉपर्टी भी है। उनके काम 3 फ्लैट हैं। एक फ्लैट 9 करोड़, दूसरा 8 और तीसरा कम से कम 2 करोड़ का है। इतना ही नहीं उर्मिला के पास एक जमीन भी है, जिसकी कीमत कुल 60 लाख रुपए है। उर्मिला मातोंडकर के पास पीएफ खाते में करीब 62 लाख रुपये जमा हैं, जबकि उनके बैंक खातों में 51 लाख रुपये से अधिक की राशि मौजूद है। निवेश की बात करें तो उन्होंने लगभग 34 करोड़ रुपये के शेयर, बॉन्ड और म्यूचुअल फंड्स में निवेश किया हुआ है। उनकी लग्जरी लाइफस्टाइल का अंदाजा उनकी महंगी कारों से भी लगाया जा सकता है, जिनमें एक शानदार मर्सिडीज कार भी शामिल है। खास बात यह है कि उर्मिला पर किसी तरह का कोई बैंक लोन नहीं है। 2016 में उर्मिला ने मोहसिन अख्तर संग शादी की थी और यह ज्यादा दिन नहीं चली। 2024 में दोनों ने अलग होने का फैसला लिया और तलाक ले लिया। फिलहाल उर्मिला इस समय सिंगल हैं लेकिन उनके एक्स पति मोहसिन ने हाल ही में दूसरी शादी कर ली है और सोशल मीडिया पर निकाह की तस्वीरें भी शेयर की हैं। एक्टिंग के अलावा उर्मिला का योगदान पॉलिटिकल पार्टी में भी है और 2019 मे उन्होंने कांग्रेस पार्टी की तरफ से चुनाव लड़ा था लेकिन 2020 में उन्होंने इस पार्टी को छोड़कर शिवसेना का दामन थाम लिया था।

उड़ता पंजाब के लिए शाहिद-करीना कपूर और आलिया ने कम की थी फीस, निर्देशक अभिषेक चौबे का खुलासा

फिल्म उड़ता पंजाब के निर्देशक अभिषेक चौबे ने फिल्म से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा बताया है। उन्होंने कहा कि अगर शाहिद कपूर, करीना और आलिया भट्ट ने अपनी फीस कम नहीं की होती, तो यह फिल्म बनाना काफी मुश्किल हो जाता। बता दें कि उड़ता पंजाब 17 जून 2016 को रिलीज हुई थी। फिल्म उड़ता पंजाब को रीलीज को 10 साल पूरे होने के मौके पर निर्देशक अभिषेक चौबे कि आलिया भट्ट तो उस वक्त नई थीं। मगर, शाहिद और करीना बड़े कलाकार थे अगर वो लोग भी उड़ता पंजाब के लिए अपनी फीस कम नहीं करते, तो फिल्म को बनाना संभव नहीं हो पाता। अभिषेक ने आगे कहा, मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह फिल्म मेनस्ट्रीम फिल्म बनेगी और इसमें बड़े कलाकार काम करेंगे। फैंटम फिल्म्स ने मुझे यह करने के लिए कहा था। अभिषेक ने आगे कहा, फिल्म उड़ता पंजाब एक डार्क और मानसिक रूप से परेशान करने वाली फिल्म है। जो हर किसी को पसंद नही आती है। लेकिन, इस फिल्म ने मुझे ठीक–ठाक कमा कर दिया। अभिषेक चौबे ने ब्लम्छ से बातचीत में ऐसा कहा। अभिषेक ने बताया कि यह फिल्म पूरी इंडस्ट्री के लिए एक सीख की तरह है। उन्होंने कहा कि फिल्म को करने के लिए कलाकार जितना पैसा लेते हैं, वो सही नहीं है। ये फिल्म इंडस्ट्री के लिए बहुत खतरनाक है। सही तरीका यह है कि स्टार्स को फिल्म के मुनाफे में हिस्सदारी लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि साल 2013 में उनकी मुलाकात सुदीप शर्मा से हुई थी। अभिषेक चौबे के मुताबिक, मैं तब एनएच 10 की स्क्रिप्ट पढ़ चुका था और मुझे वह बहुत पसंद आई थी। इसलिए मैं उनके साथ काम करना चाहता था। उस समय मेरे मन में ड्रग्स पर आधारित एक फिल्म बनाने का एक विचार था। हालांकि, तब इसकी कहानी पंजाब में नहीं, बल्कि पूरे भारत के परिवेश में सोची गई थी। अभिषेक चौबे ने कहा, श्मुझे याद है कि जब मैं डेढ़ इश्किया की एडिटिंग कर रहा था, तब सुदीप मेरे पास आए और उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि कहानी को पंजाब में सेट किया जाए। मैंने तुरंत इस आइडिया को स्वीकार कर लिया। वहां पॉप म्यूजिक की एक मजबूत संस्कृति है, जिसे मैं एक्सप्लोर करना चाहता था। साथ ही, वहां नशे की गंभीर समस्या भी थी, क्योंकि ड्रग्स पाकिस्तान से आ रहे थे। इस तरह कहानी के सभी पहलू आपस में जुड़ते हुए समझ में आने लगे।

10–15 करोड़ मिलें तो मैं सोने के लिए तैयार हूं... अपूर्वा मुखिजा के इस ब्यान ने सोशल मीडिया पर मचाई हलचल

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर अपूर्वा मुखिजा हमेशा से ही अपने बेबाक अंदाज के लिए जानी जाती हैं। अब वो एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। हुआ कुछ यूं कि उनका एक पुराण वीडियो सोशल मीडिया पर दोबारा वायरल हो रहा है। इस वीडियो में वो मजाकिया अंदाज में कहती नजर आ रही हैं कि यदि उन्हें अच्छा ऑफर मिलेगा तो वो कोम्प्रोमाईज कर सकती हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि वह दुबई के किसी शेख के साथ सोने पर भी विचार कर सकती हैं। यह वीडियो ऐसे समय में सामने आया है, जब इंटरनेट पर प्रणित मोरे के शो और 370 रुपए वाली बिरयानी विवाद को लेकर जमकर बहस छिड़ी हुई है, जिसके चलते अपूर्वा की यह क्लिप तेजी से वायरल हो रही है। इस वीडियो में वो कह रही है कि वो किसी छोटे–मोटे रोल के लिए किसी के साथ नहीं सोऊंगी लेकिन यदि अगर कोई दुबई का शेख मुझे 15 करोड़ रुपये ऑफर करें तो मैं इस बारे में सोच सकती हैं। लेकिन एक रोल के लिए ? बिल्कुल भी नहीं उसी वीडियो में अपूर्वा मुखिजा ने यह भी बताया कि एक डायरेक्टर ने उनसे संपर्क किया था। हालाँकि उन्हें पूरा मामला कुछ सही नहीं लगा इसलिए सीधा बात करने की जगह उन्होंने अपने मैनेजर का नंबर उसे दे दिया। बाद में उनकी एक दोस्त ने इस बात को गलत समझ लिया और उसे लगा कि अपूर्वा किसी को डेट कर रही हैं। अब जब यह पुराना वीडियो फिर से वायरल हो रहा है तो सोशल मीडिया पर इसे लेकर बहस छिड़ी गई है। कई लोग सवाल उठा रहे हैं कि इस तरह के विवादित बयानों के बावजूद अपूर्वा लगातार ब्रांड एंडोर्समेंट कर रही हैं और ओटीटी प्रोजेक्ट्स में नजर आ रही हैं और एक लोकप्रिय सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनी हुई हैं। दूसरी तरफ, कॉमेडियन प्रणील मोरे के शो में 370 रुपये की बिरयानीश वाले विवादित बयान के बाद हिमांशु जांगड़ा को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी थी। इसी वजह से दोनों मामलों की तुलना करते हुए इंटरनेट पर अलग–अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं।

मेरे सारे दुश्मन लो बजट हैं... तान्या मित्तल के इस बयान के बाद फूटा कुनिका सदानंद, बोलीं- घमंड ज्यादा दिन नहीं टिकता

बिग बॉस खत्म होने के बाद भी रियल लाइफ में भी कुछ कंटेस्टेंट्स की जंग हमेशा जारी रहती है। ऐसे ही तान्या मित्तल और कुनिका को अक्सर बिग बॉस के घर में झगड़ा करते हुए देखा गया है लेकिन अब शो खत्म हो गया है। फिर भी दोनों के बीच की तकरार देखी जा सकती है। आए दिन दोनों किसी न किसी बात को लेकर सोशल मीडिया पर भिड़े रहते हैं। अब हाल ही में तान्या मित्तल ने कुछ ऐसा पोस्ट किया, जिसके बाद कुनिका काफी ज्यादा भड़क गईं और खुद पोस्ट करके उन्हें मुहतोड़ जवाब दिया। तो चलिए जानते हैं क्या है पूरा विवाद ?

तान्या मित्तल ने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसने सोशल मीडिया पर खूब सुर्खियां बटोरीं। अपनी पोस्ट में उन्होंने लिखा कि जो लोग उनसे नफरत करते हैं, उनमें से किसी के पास भी रोल्स रॉयस कार नहीं है और उनके सभी विरोधी लो बजट हैं। इसके साथ ही उन्होंने इसे अपना आज का विचार भी बताया। उनके इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर तरह–तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। इसके बाद कुनिका सदानंद ने भी सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर बिना किसी का नाम लिए तान्या मित्तल पर तंज कस दिया। उन्होंने लिखा कि यह देखकर हैरानी होती है कि कुछ लोग अपनी कथित दौलत में ही खोए हुए हैं, जबकि देश में युवा प्रदर्शन कर रहे हैं, बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है, अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों से जूझ रही है और लोकतंत्र के सामने भी कई गंभीर मुद्दे खड़े हैं। इसके बावजूद कुछ लोग सिर्फ मैं, मैं और मैं में ही व्यस्त हैं। हालांकि कुनिका ने अपने पोस्ट में किसी का नाम नहीं लिया लेकिन सोशल मीडिया यूजर्स ने इसे सीधे तान्या मित्तल के वायरल पोस्ट से जोड़ दिया। कमेंट सेक्शन में कई लोगों ने कुनिका के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि वे इसी प्रतिक्रिया का इन्तजार कर रहे थे। वहीं कुछ यूजर्स ने उनकी बात को सही ठहराया, जबकि कुछ ने मजाकिया अंदाज में लिखा कि बिग बॉस खत्म होने के बाद भी इन सितारों का बिग बॉस अभी खत्म नहीं हुआ है। फिलहाल तान्या मित्तल अपनी मां सुनीता मित्तल के साथ जी5 के रियलिटी शो मां हैं न में नजर आ रही हैं। शिल्पा शेट्टी द्वारा होस्ट किए जा रहे इस कुकिंग शो को दर्शकों का अच्छा रिस्पांस मिल रहा है और इसके कई प्रोमो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहे हैं। यह शो 12 जून से शुरू हुआ है। इसके अलावा, खबर है कि तान्या जल्द ही एकता कपूर के एक नए प्रोजेक्ट का भी हिस्सा बनने वाली हैं, हालांकि इस शो की आधिकारिक घोषणा अभी नहीं की गई है।

गर्मियों में लें ठंडी- ठंडी कुल्फी का मजा, जानें इसकी आसान रेसिपी

गर्मी में राहत पाने के लिए लोग ज्यादातर आइसक्रीम खाना पसंद करते हैं पर बाजार से मिलने वाली आइसक्रीम बच्चों की सेहत पर बुरा असर डालती है। ऐसे में आज हम आपको एक ऐसी डिश की सिंपल रेसिपी बताने जा रहे हैं। जिसे आप घर पर आसानी से बना सकते है। हम बात कर रहे हैं कुल्फी की। तो चलिए जानते है इसे बनाने का तरीका।

सामग्री

दूध – 2 लीटर

चीनी – 5 टेबल स्पून

पिस्ता – छोटी आधी कटोरी (कटा हुआ)

केसर के धागे – आधा टीस्पून

छोटी इलायची – 8 (पीसी हुई)

बनाने की विधि

1 एक बर्तन में दूध को उबालें और एक तिहाई होने तक इसे पकने दें।

2 फिर दूध में चीनी और पिस्ता डालें डालकर लगातार चलाते रहें।

3 इसके बाद इसमें पिसी हुई केसर और इलायची डालें।

4 पकने के बाद इसे गैस से हटाकर ठंडा होने के लिए रख दें।

5 ठंडा हो जाए तो कुल्फी मोड में इसे डालकर फ्रिज में जमने के लिए रख दें।

6 जब कुल्फी जम जाए तो ठंडी–ठंडी ही परोसें।

मास्टर शेफ पंकज भदौरिया से जानें भिंडी के लिसलिसेपन को दूर करने का आसान तरीका

भिंडी खाने में काफी ज्यादा स्वादिष्ट होती है। लेकिन कई लोग भिंडी के चिपचिपेपन से के कारण इसे न सिर्फ बनाने बल्कि खाने से भी कतराते हैं। बता दें कि भिंडी का

लसलसापन इसमें मौजूद म्यूसिलेज नामक पदार्थ की वजह से होता है। म्यूसिलेज नामक पदार्थ भिंडी के पौधे के विकास के लिए काफी जरूरी होता है। हालांकि कई बार भिंडी को बनाने में चिपचिपेपन के कारण काफी परेशानी होती है।

अगर आप भी भिंडी को इसके चिपचिपेपन के कारण बनाने व खाने में कतराते हैं तो यह आर्टिकल आपके लिए है। इस समस्या से निजात पाने के लिए मास्टर शेफ पंकज भदौरिया ने एक जबरदस्त उपाय बताया है। भिंडी बनाने के दौरान यह नुस्खा आपके बहुत काम आ सकता है।

फ्रेश भिंडी खरीदें

मास्टर शेफ पंकज भदौरिया ने भिंडी के लसलसेपन से बचने के लिए हमेशा फ्रेश भिंडी खरीदने की सलाह दी। फ्रेश भिंडी को खरीदते समय हमेशा इसके किनारे को हल्का सा तोड़कर देखें। अगर यह आसानी से टूट जाती है तो इसका मतलब की भिंडी फ्रेश है। लेकिन अगर यह आसानी से नहीं टूटती है तो भिंडी में फाइबर की मात्रा ज्यादा मौजूद होती है। यह पकाते समय रेशेदार पदार्थ को छोड़ सकती है।

ऐसे साफ करें भिंडी

भिंडी को अच्छे से साफ करने के लिए इसे नल खोलकर अच्छे से साफ करें। फिर इसे सूखे कपड़े से पोंछकर सुखा लें। इसके बाद भिंडी को काटकर थोड़ी देर के लिए इसे ऐसे ही छोड़ दें। इस तरह से भिंडी का लसलसापन काफी हद तक कम हो जाता है।

भिंडी चिपचिपी होने पर

शेफ पंकज भदौरिया ने बताया कि अगर भिंडी बनाने के दौरान यह चिपचिपी हो जाए तो इसमें थोड़ा सा नींबू का रस निचोड़ दें। इस तरह से भिंडी का लसलसापन दूर होता है। साथ ही भिंडी का टेस्ट भी बढ़ जाता है।

अपनाएं ये तरीका

भिंडी के लसलसेपन को दूर करने के लिए इसे थोड़े बड़े–बड़े टुकड़ों में काटना चाहिए। फिर भिंडी को कढ़ाई में 5–10 मिनट तक के लिए ऐसे ही फ्राई कर लें। इसके बाद इसमें अन्य मसाले आदि डालकर पकाएं। भिंडी को पहले थोड़ा फ्राई करने पर श्लेष्मा नहीं फैलता है।

चेहरे पर प्राकृतिक निखार लाने के लिए चावल के आटे का करें इस्तेमाल

त्वचा को खूबसूरत बनाने के लिए लोग कई तरह के स्किन केयर ट्रीटमेंट का सहारा लेते है। जिनका प्रभाव कुछ देर के लिए ही होता है। लंबे समय तक त्वचा को सूबसूरत बनाने के लिए आपको प्राकृतिक उपचार की जरूरत होती है। चेहरे को कोरियन की तरह चमकदार बनाने के लिए चावल का आटा बेहद लाभदायक होता है और इसके स्किन को भी काफी फायदे होते हैं। तो आइये जानते हैं चावल के आटे को आप किस तरह इस्तेमाल कर सकती हैं ताकि आप पा सकें कोरियन जैसी दमकती स्किन।

सामग्री

चावल का आटा

शहद

ओट्स

चावल के आटे के फायदे

चावल के आटे में पहले से ही स्किन–व्हाइटनिंग गुण मौजूद होता है।

स्किन के डेड सेल्स रिमूव होते है।

स्किन को रिपेयर करने में चावल का आटा बेस्ट ऑप्शन है।

शहद के फायदे

त्वचा को नैचुरली एक्सफोलिएट करने के लिए शहद बेहद फायदेमंद होता है।

चेहरे में मौजूद पोर्स साफ होते है।

त्वचा को मुलायम रखने में शहद बेहद मददगार साबित होता है।

स्किन को मॉइस्चराइज करने के लिए मदद करता है।

ओट्स के फायदे

स्किन एक्सफोलिएशन करने के लिए ओट्स काफी मदद करता है।

त्वचा को मॉइस्चराइज करने के लिए ओट्स बेस्ट ऑप्शन है।

टैनिंग को हटाने में कारगर है।

एजिंग–साइंस को कम करता है।

इस तरह करें इस्तेमाल

एक बाउल 3 चम्मच चावल के आटे के साथ 2 चम्मच शहद मिलाएं।

अब आप करीब 1 से 2 चम्मच इसमें पीसे हुए ओट्स डालें।

पीसने के लिए आप मिक्सचर का इस्तेमाल करें।

फिर सभी चीजों को अच्छे से मिलाकर चेहरे पर अप्लाई करें।

इस फेस पैक को आंखों से दूर ही रखें और 20 मिनत तक लगा रहने दें।

अब साफ पानी से चेहरा धो लें।

इस पैक को आप 3 बार तक इस्तेमाल कर सकते है।

लगातार इसके इस्तेमाल से आपका चेहरा नैचुरली ग्लो करने लग जाएगा।

फ्रिज में जम गई है गंदगी तो साफ करने में बड़ी मदद करेंगे ये हैक्स

आजकल हर घर में फ्रिज का यूज होता है। ऐसे में इसे अच्छे से साफ न किया जाए तो कई तरह की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। क्योंकि आपकी थोड़ी सी लापरवाही पूरे परिवार की मुश्किलें बढ़ा सकती हैं। ऐसे में आज आपको कुछ ऐसे आसान हैक्स बताएंगे जिन्हें आप फ्रिज साफ करने के लिए अपना सकते हैं। तो चलिए जानते है उनके बारे में।

फ्रिज की सफाई

फ्रिज की सफाई हमेशा अंदर से शुरु करनी चाहिए इसके लिए आप पहले एक बाउल में डिशवाशिंग लिक्विड डाल लें और फिर एक स्पंज की मदद से पूरा फ्रिज साफ कर लें। इसके बाद फ्रिज को किसी सूखे कपड़े से साफ करें।

ऐसे करें दरवाजा साफ

फ्रिज का घर में सबसे ज्यादा यूज होता है क्योंकि दिन में कितनी बार हम फ्रिज का दरवाजा खोलते और बंद करते है। जिस कारण उसका हैंडल बहुत ज्यादा गंदा हो जाता है। जिसे साफ करना महिलाओं के लिए थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन परेशान न हो क्योंकि इसे साफ करने के

लिए आप सबसे पहले गर्म पानी में डिशवाशिंग लिक्विड डालकर घोल तैयार कर लें और फिर उसका यूज करके रगड़–रगड़ कर हैंडल को साफ कर लें।

गस्केट ऐसे करें साफ

फ्रिज के गस्केट को चमकाने के लिए आपको एक बाउल में थोड़ा सा विनेगर और पानी डालकर मिक्स करना है। अब इस घोल का यूज करके किसी साफ कपड़े की मदद से गस्केट को साफ कर लें। उसके बाद कपड़े की मदद से उसे पोंछ कर सुखा लें।

ट्रे और ड्राअर

अगर ट्रे और ड्राअर में बहुत ज्यादा दाग जम गए हैं तो पानी गर्म करें और उसमें डिटर्जेंट डालकर ट्रे और ड्राअर को कुछ देर के लिए छोड़ दें। इसके बाद इन्हें साफ पानी से धो लें।

जिद्दी दाग को ऐसे साफ करें

फ्रिज में अगर कही आपको जिद्दी दाग दिख रहे है तो इन्हें आप विनेगर और बेकिंग सोडा के पेस्ट से साफ कर सकते है। फ्रिज के जिस हिस्से में आपको दाग दिखे वहां पर इसका पेस्ट लगाकर किसी कपड़े से रगड़ें। इसके बाद पानी से इसे साफ कर लें।

जानें नाक की ऐसी बनावट से जुड़े व्यक्तित्व के दिलचस्प राज

क्या आपने कभी सोचा है कि आपकी नाक का आकार भी आपके व्यक्तित्व के बारे में कुछ बता सकता है? सामुद्रिक शास्त्र और फेस रीडिंग से जुड़ी मान्यताओं के अनुसार, नाक की बनावट व्यक्ति के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, भावनाओं और व्यवहार से जुड़ी कुछ विशेषताओं की ओर इशारा कर सकती है। आइए जानते हैं कि विभिन्न प्रकार की नाक को किस तरह के स्वभाव से जोड़ा जाता है।

रोमन नाकः आत्मविश्वास और नेतृत्व का प्रतीक

रोमन नाक की पहचान इसके बीच में हल्के उभार या घुमाव से की जाती है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, इस तरह की नाक वाले लोगों को साहसी, आत्मविश्वासी और नेतृत्व क्षमता से भरपूर माना जाता है। कहा जाता है कि ऐसे लोग चुनौतियों का डटकर सामना करते हैं और अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए मेहनत करने से पीछे नहीं हटते।

नुबियन नाकः खुले विचारों वाले व्यक्तित्व की पहचान

नुबियन नाक वाले लोगों को खुले विचारों वाला और रचनात्मक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि वे नए विचारों को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं और समस्याओं का अलग नजरिए से समाधान खोजने में सक्षम होते हैं। साथ ही, वे सामाजिक रूप से मिलनसार और दूसरों का

सम्मान करने वाले माने जाते हैं।

सीधी नाकः ईमानदारी और विश्वसनीयता का संकेत

सीधी नाक को अनुशासन, ईमानदारी और भरोसेमंद व्यक्तित्व का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि ऐसे लोग अपने रिश्तों और जिम्मेदारियों को गंभीरता से लेते हैं। वे अपने परिवार और दोस्तों के प्रति समर्पित रहते हैं और एक बार विश्वास कायम होने पर रिश्तों को लंबे समय तक निभाते हैं।

टेढ़ी नाकः शांत और विनम्र स्वभाव

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, टेढ़ी नाक वाले लोग आमतौर पर शांत, विनम्र और समझदार माने जाते हैं। वे विवादों से दूर रहना पसंद करते हैं और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने में विश्वास रखते हैं। जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद करना भी उनके स्वभाव का हिस्सा माना जाता है।

गोल नाकः भावुक और रचनात्मक व्यक्तित्व

गोल नाक वाले लोगों को स्नेही, संवेदनशील और रचनात्मक माना जाता है। कहा जाता है कि वे अपने परिवार और दोस्तों से गहरा लगाव रखते हैं और अपने व्यवहार से लोगों का दिल जीत लेते हैं। हालांकि, कुछ स्थितियों में वे जिद्दी भी हो सकते हैं।

मांसल नाकः व्यावहारिक और समझदार

मांसल या मोटी नाक वाले लोगों को बुद्धिमान और व्यावहारिक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि वे आर्थिक मामलों में सावधानी बरतते हैं और किसी भी निर्णय को लेने से पहले उसके सभी पहलुओं पर विचार करते हैं। वे भावनाओं से प्रभावित होने के बावजूद वास्तविकता को ध्यान में रखकर फैसले लेने की कोशिश करते हैं।

ध्यान रखेंः नाक की बनावट और व्यक्तित्व के बीच संबंध सामुद्रिक शास्त्र और पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं। इन्हें वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है। किसी व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व को केवल शारीरिक बनावट के आधार पर नहीं आंका जा सकता, क्योंकि व्यक्तित्व कई सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत अनुभवों से मिलकर बनता है।

संक्षिप्त

2.7 अरब डॉलर में बिकेगी दुनिया की मशहूर पिज्जा चेन पिज्जा हट

मशहूर पिज्जा चेन पिज्जा हट बिकने जा रही है। पिज्जा हट, केएफसी और टाको बेल की पेरेंट कंपनी यम ब्रांड्स ने पिज्जा हट को बेचने का फैसला किया है। यह डील 2.7 अरब डॉलर में हुई है। बदलती उपभोक्ता पसंद, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और कमजोर होती बिक्री के चलते कंपनी ने यह फैसला किया है और यह सौदा, वैश्विक रेस्टोरेंट उद्योग के सबसे बड़े सौदों में से एक माना जा रहा है। सौदे के तहत यम चाइना होल्डिंग नामक कंपनी चीन में पिज्जा हट के कारोबार को 1.2 अरब डॉलर में खरीदेगी, जबकि वैश्विक कारोबार का बाकी हिस्सा निजी इक्विटी फर्म स्वदहत्दहम ब्वपजंस 1.5 अरब डॉलर में खरीदेगी। सभी नियामकीय मंजूरियां मिलने के बाद यह सौदा 2026 की तीसरी तिमाही तक पूरा होने की उम्मीद है। पिछले कुछ वर्षों से पिज्जा हट बदलती खान–पान की आदतों और तेज प्रतिस्पर्धा के चलते संघर्ष कर रही है। बढ़ती महंगाई और खाने के सामान की ऊंची कीमतों ने पिज्जा कारोबार पर दबाव बढ़ाया है। उपभोक्ता भी खर्च में सतर्कता बरत रहे है और स्वास्थ्य कारणों से भी कई लोग स्वस्थ भोजन विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। साथ ही ऑनलाइन फूड डिलीवरी ने भी पिज्जा हट को नुकसान पहुंचाया है। लगातार कई तिमाहियों तक बिक्री में गिरावट के बाद यम ब्रांड्स ने पिछले साल पिज्जा हट को बेचने पर विचार शुरू कर दिया था। इसी क्रम में कंपनी ने लॉन्ग रेंज कैपिटल के साथ बातचीत शुरू की। यम ब्रांड्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस टर्नर ने कहा कि यह सौदा कंपनी को अपने अन्य सफल ब्रांडों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा। पिज्जा हट की बिक्री के बाद यम ब्रांड्स के पास मुख्य रूप से केएफसी और टाको बेल जैसे ब्रांड रह जाएंगे, जिन्होंने हाल के वर्षों में बेहतर प्रदर्शन किया है। विश्लेषकों का मानना है कि कंपनी अब अपने तेजी से बढ़ते व्यवसायों में निवेश बढ़ाना चाहती है। पिज्जा हट दुनिया के सबसे चर्चित रेस्टोरेंट ब्रांड्स में से एक है। 1977 में इसे पेप्सीको ने खरीदा था। बाद में 1997 में पिज्जा हट, केएफसी और टाको बेल को अलग कर ट्राइकोन ग्लोबल रेस्टोरेंट्स नामक ब्रांड बनाया गया, जो आगे चलकर 2002 में यम ब्रांड्स बना। दशकों तक पिज्जा हट ने वैश्विक स्तर पर पिज्जा डाइनिंग संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

क्यों आई शेयर बाजार में तेजी? मार्केट कैप 5 ट्रिलियन डॉलर के पार, निवेशकों की हुई बल्ले–बल्ले

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय शेयर बाजार के लिए बुधवार का दिन काफी अच्छा रहा। बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण यानी मार्केट कैप 5 ट्रिलियन डॉलर के स्तर को पार कर गया। लगभग छह सप्ताह के बाद बाजार इस ऊंचे स्तर पर पहुंचा है। भू राजनीतिक तनाव में कमी और कच्चे तेल के दामों में गिरावट के चलते बाजार में तेजी देखने को मिली है। पिछले कुछ दिनों से बाजार में मजबूती की स्थिति बनी हुई है। अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौते को लेकर चल रही पहल और तेल की कीमतों में कमी से निवेशकों का भरोसा लौटा है। विशेषज्ञों का कहना है कि बाजार में अस्थिरता कम होने से अब लोग निवेश करने में जोखिम उठा रहे हैं। इसके अलावा, पिछले चार कारोबारी सत्रों में बीएसई–लिस्टेड कंपनियों के मार्केट वैल्यू में 6 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। बाजार के मुख्य सूचकांकों की तुलना में मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों ने बेहतर प्रदर्शन किया है। अप्रैल महीने से अब तक सेंसेक्स में सीमित बढ़त रही है लेकिन छोटे और मझोले शेयरों ने निवेशकों को मजबूत रिटर्न दिया है। पश्चिम एशिया में तनाव कम होने से भारतीय अर्थव्यवस्था को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। विशेषज्ञों का कहना है कि विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली के बाद भी घरेलू निवेशकों के दम पर बाजार टिका हुआ है। यदि आगे विदेशी निवेश बढ़ता है तो बाजार और भी नई ऊंचाइयों को छू सकता है। भारत की मजबूत विकास दर और कंपनियों की बेहतर आर्थिक स्थिति भी बाजार को सहारा दे रही है।

हरे निशान पर सेंसेक्स-निफ्टी, शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले रुपया 18 पैसे मजबूत

नई दिल्ली,एजेंसी। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट और अमेरिका–ईरान शांति समझौते को लेकर आशावाद के कारण पिछले तीन दिनों की तेजी के बाद बुधवार सुबह के कारोबारी सत्र में घरेलू शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक सपाट कारोबार करते दिखाई दिए। इसके बाद शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 8.58 अंक या 0.01 प्रतिशत की बढ़त के साथ 76,817.58 पर कारोबार कर रहा था जबकि निफ्टी 1 अंक की मामूली गिरावट के साथ 23,988 पर था। इससे पहले दिन की शुरुआत में 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 284.69 अंक या 0.37 प्रतिशत चढ़कर 77,093.17 के इंट्राडे उच्च स्तर तक पहुंच गया। वहीं, 50 शेयरों वाला निफ्टी 58.89 अंक या 0.24 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,044.50 पर खुला। सेक्टोरल मोर्चे पर निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 1.26 प्रतिशत की बढ़त के साथ सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला सूचकांक रहा। इसके बाद निफ्टी आईटी और निफ्टी मीडिया का स्थान रहा।

वर्ल्ड कप में चमके किलियन एमबाप्पे और एरलिंग हालंद, टीम को ट्रॉफी जिताने पर दोनों स्टार्स का फोकस

न्यूयॉर्क,एजेंसी। फीफा विश्व कप 2026 के छठे दिन फुटबॉल जगत के दो सबसे बड़े सितारे किलियन एमबाप्पे और एरलिंग हालंद छाए रहे। एमबाप्पे ने सेनेगल के खिलाफ दो गोल दागकर फ्रांस को 3–1 से जीत दिलाई, जबकि हालंद ने विश्व कप पदार्पण मैच में दो गोल और एक असिस्ट के साथ नॉर्वे को इराक पर 4–1 की शानदार जीत दिलाई। दोनों खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत उपलब्धियां हासिल कीं, लेकिन मैच के बाद उनका ध्यान रिकॉर्ड्स से ज्यादा अपनी–अपनी टीमों की सफलता पर केंद्रित नजर आया। सेनेगल के खिलाफ मुकाबले में दो गोल करते ही किलियन एमबाप्पे फ्रांस के लिए अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए। उनके नाम अब 58 गोल हो गए हैं और उन्होंने ओलिवियर गिरौद (57) को पीछे छोड़ दिया है। इसके साथ ही एमबाप्पे विश्व कप में फ्रांस के लिए सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी भी बन गए। उनके नाम अब विश्व कप में 14 गोल हैं और उन्होंने जस्ट फॉनटेन (13) का रिकॉर्ड तोड़ दिया। हालांकि, मैच के बाद एमबाप्पे ने साफ कर दिया कि उनका लक्ष्य व्यक्तिगत रिकॉर्ड नहीं, बल्कि फ्रांस को विश्व कप जिताना है। उन्होंने कहा, श्मैं चाहता हूं कि मेरा नाम फ्रांस के फुटबॉल इतिहास में याद रखा जाए। मेरी कोशिश है कि टीम फाइनल तक पहुंचे और वर्ल्ड कप जीते। रिकॉर्ड और उपलब्धियां मेरे करियर का हिस्सा हैं, लेकिन टीम की सफलता सबसे महत्वपूर्ण है। पहले हाफ में सेनेगल ने फ्रांस को कड़ी टक्कर दी और कई अच्छे मौके भी बनाए। लेकिन दूसरे हाफ में फ्रांस ने आक्रामक खेल दिखाया। माइकल ओलिस के पास पर एमबाप्पे ने पहला गोल दागा और फिर स्टॉपेज टाइम में लंबी दूरी से शानदार शॉट लगाकर अपना दूसरा गोल किया। ब्रैडली बारकोला ने भी एक गोल किया, जबकि सेनेगल के लिए इब्राहिम मबाये ने सांत्वना गोल किया। दूसरी ओर, नॉर्वे के स्टार स्ट्राइकर एरलिंग हालंद ने अपने पहले विश्व कप मैच को यादगार बना दिया। उन्होंने इराक के खिलाफ दो गोल और एक असिस्ट दर्ज किया। उनकी बदौलत नॉर्वे ने 28 साल बाद विश्व कप में वापसी करते हुए जीत के साथ अभियान की शुरुआत की। मैच के बाद हालंद ने कहा, मुझे लगता है कि लोगों ने बड़ी स्क्रीन पर देख लिया होगा कि मैं कैसा महसूस कर रहा था। यह शानदार एहसास है और मुझे गर्व है। विश्व कप में पदार्पण करना और 28 साल बाद नॉर्वे को विश्व कप मैच जिताने में योगदान देना मेरे लिए बेहद खास है। मेरा पहला गोल अच्छा था, दूसरा उससे भी बेहतर। अब उम्मीद है कि पूरे नॉर्वे में जश्न मनाया जाएगा। हालंद के कोच स्टाले सोलबाकेन ने उन्हें दुनिया का सर्वश्रेष्ठ गोलस्कोरर बताया था, लेकिन हालंद ने इस दावे को विनम्रता से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि मैं सर्वश्रेष्ठ गोलस्कोररों में जरूर हूं, लेकिन इस सीजन सबसे ज्यादा गोल मैंने नहीं किए। आंकड़ों के हिसाब से हैरी केन और किलियन एमबाप्पे ने मुझसे ज्यादा गोल किए हैं, इसलिए मैं खुद को नंबर एक नहीं कहूंगा। हालंद की तारीफ करते हुए उनके साथी खिलाड़ी सैंडर बर्गे ने कहा, एरलिंग बेहद खतरनाक और प्रभावी खिलाड़ी हैं। वह किसी भी पल मैच का रुख बदल सकते हैं। उनमें गोल करने की भूख हमेशा दिखाई देती है। वह एक जानवर की तरह खेलते हैं।

ओटीटी पर देखी नडाल की कहानी, मैदान पर बरपा मेसी का कहर, अल्जीरिया के खिलाफ हैट्रिक से रचा इतिहास

वेलिंगटन,एजेंसी। फीफा विश्व कप में अल्जीरिया के खिलाफ अर्जेंटीना के पहले मुकाबले से पहले लियोनेल मेसी ने तैयारी का एक अलग तरीका चुना। 38 वर्षीय स्टार फुटबॉलर ने खुलासा किया कि वह मैच से पहले नेटफ्लिक्स पर राफेल नडाल की डॉक्यूमेंट्री देख रहे थे। इसके बाद उन्होंने मैदान पर हैट्रिक लगाकर विश्व कप इतिहास में सबसे ज्यादा गोल करने के मिरोस्लाव क्लोजे के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। जिस खिलाड़ी ने अपने करियर में लगभग हर बड़ा खिताब जीत लिया हो, उसके लिए रिकॉर्ड छठे विश्व कप अभियान की शुरुआत का तरीका भी अलग ही हो सकता है। मेसी ने मुकाबले से पहले राफेल नडाल की डॉक्यूमेंट्री देखी और महान टेनिस खिलाड़ी के संघर्ष और जज्बे से प्रेरणा ली। ग्रुप जे के मुकाबले में अल्जीरिया के खिलाफ अर्जेंटीना के लिए अपना 200वां मैच खेलने उतरे मेसी ने उम्र और चोट की चर्चाओं को पीछे छोड़ दिया। वह पूरे मुकाबले में बेहद आत्मविश्वास और ऊर्जा से भरे नजर आए और अपने प्रदर्शन से मैच का रुख बदल दिया। रिकॉर्ड की बराबरी करने वाली हैट्रिक के बाद मेसी ने कहा ष्मुझे बचपन से फुटबॉल खेलना पसंद है और जब मैं अच्छा महसूस करता हूं तो अपना सब कुछ झोंक देता हूं।ष उन्होंने आगे कहा, मैं राफा नडाल की डॉक्यूमेंट्री देख रहा हूं। मुझे लगता है कि इस मामले में हम दोनों काफी समान हैं। मैं अच्छा महसूस करना चाहता हूं और अगर मैं अच्छी स्थिति में रहूंगा तो खेलता रहूंगा। कतर में अपना सबसे बड़ा सपना पूरा करने के चार साल बाद भी मेसी का जुनून कम नहीं हुआ है। उन्होंने ऐसा प्रदर्शन किया जिसने यह साबित कर दिया कि उनके भीतर प्रतिस्पर्धा की भावना अब भी उतनी ही मजबूत है जितनी पहले थी। मैच के आठवें मिनट में मेसी का एक गोल ऑफसाइड करार दिया गया, लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया। 17वें मिनट में उन्होंने बीच मैदान से गेंद संभाली, कुछ खिलाड़ियों को छकाया और बॉक्स के बाहर से बाएं पैर से शानदार शॉट लगाकर गोलकीपर लुका जिदान को मात दी। 60वें मिनट में एलेक्सिस मैक एलिस्टर के शॉट पर गोलकीपर द्वारा छोड़ी गई गेंद पर मेसी ने तेजी से प्रतिक्रिया दी और दाएं पैर से गोल दाग दिया। इसके 16 मिनट बाद मैक एलिस्टर के साथ बेहतरीन तालमेल दिखाते हुए उन्होंने बाएं पैर से शानदार फिनिश किया। यह विश्व कप में उनका 16वां गोल था, जिसके साथ उन्होंने मिरोस्लाव क्लोजे के सर्वकालिक रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। खास बात यह रही कि यह उपलब्धि उन्होंने अपने रिकॉर्ड छठे विश्व कप में हासिल की, ठीक 20 साल बाद जब उन्होंने सर्बिया और मोंटेनेग्रो के खिलाफ विश्व कप में पहला गोल किया था।

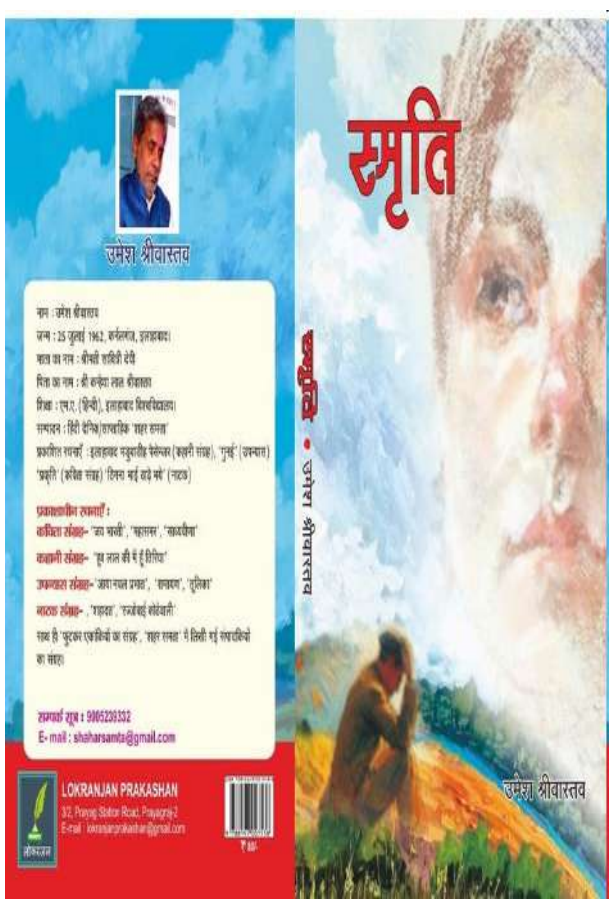

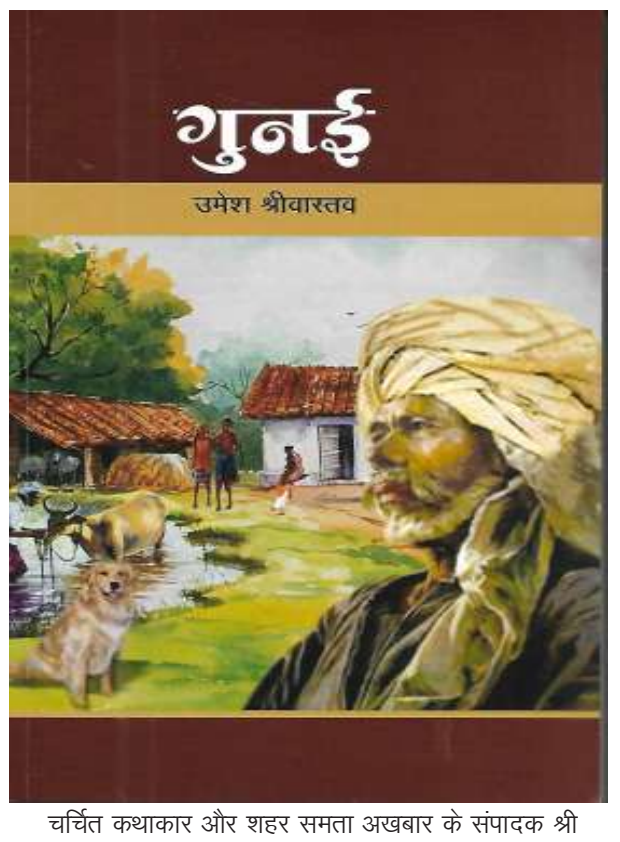

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

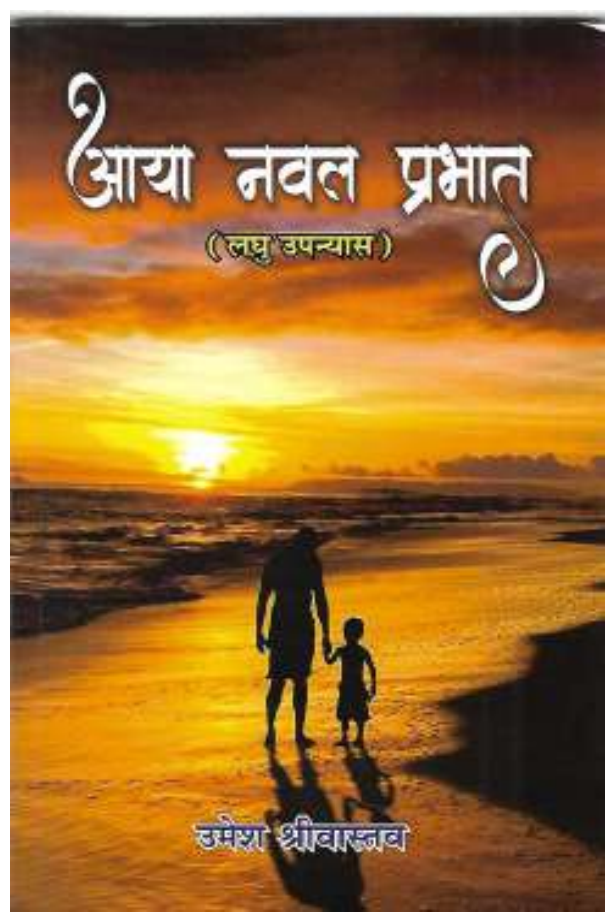

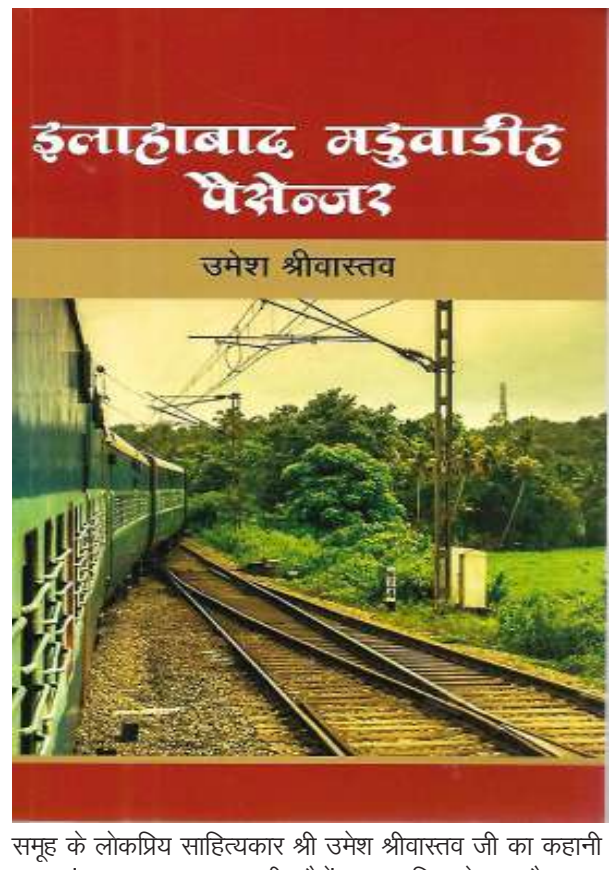

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

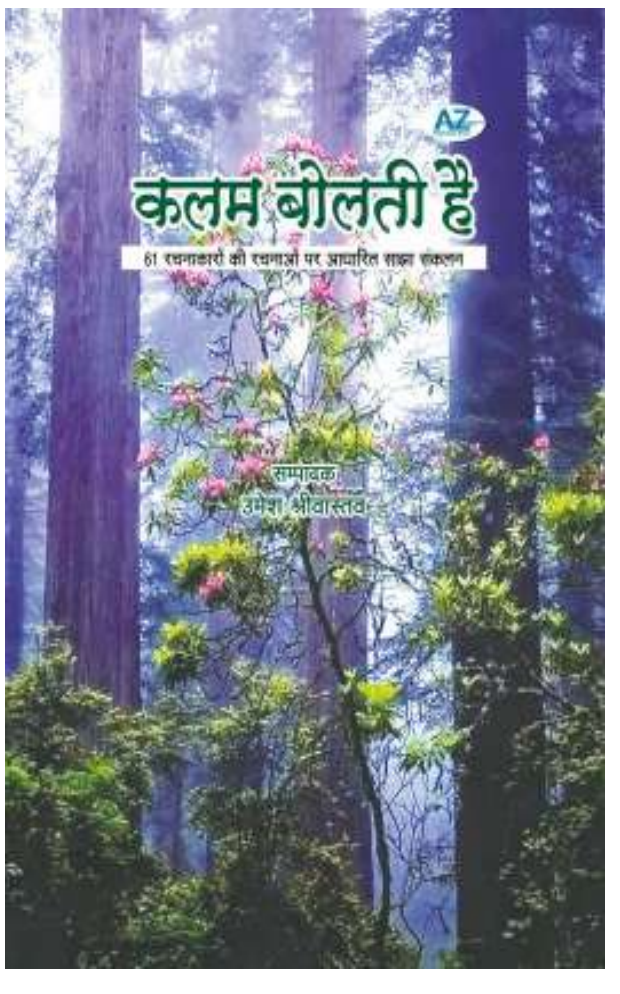

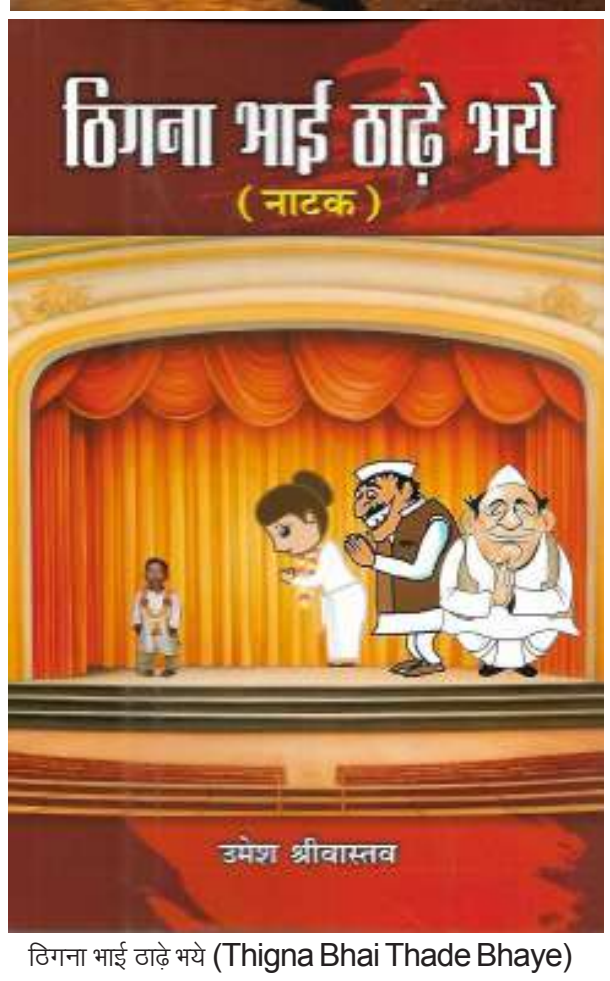

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

कट्टरपंथियों की धमकी के बाद रुका भगवान राम की मूर्ति का निर्माण कार्य, ढहाने की दी थी चेतावनी

ढाका, एजेंसी। पड़ोसी देश बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और प्रताड़ना की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। शेख हसीना की सरकार हटने के बाद

से वहां हालात और भी ज्यादा खराब हो गए हैं। अब ताजा मामला रंगपुर संभाग के पलाशबाड़ी इलाके से सामने आया है, जहां कट्टरपंथियों के दबाव में भगवान राम की एक निर्माणाधीन मूर्ति का काम रोक दिया गया है। मंदिर समिति ने क्या कहा? मंदिर समिति ने जानकारी दी है कि उन्हें कट्टरपंथी संगठनों से लगातार धमकियां मिल रही थीं। इन संगठनों ने चेतावनी दी थी कि वे मूर्ति को ध्वस्त कर देंगे और इलाके में हिंसा फैलाएंगे। क्षेत्र में शांति और सौहार्द बनाए रखने के लिए मंदिर प्रबंधन ने फिलहाल निर्माण कार्य को स्थगित करने का फैसला किया है। मंदिर समिति के एक सदस्य ने मीडिया को बताया कि समाज और देश के हित को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। उन्होंने कहा कि भविष्य में अगर जरूरत महसूस हुई, तो वे सभी पक्षों को बुलाएंगे और उनके सुझाव लेने के बाद ही काम को दोबारा शुरू करने पर विचार करेंगे। कैस शुरू हुआ विवाद? यह पूरा विवाद तब शुरू हुआ जब श्इंसाफ कायमकारी छात्र श्रमिक जनताश नाम के एक कट्टरपंथी संगठन से जुड़े उपदेशक ने इस मूर्ति को लेकर धमकी दी। सोशल मीडिया पर वायरल हुए बयानों में इस उपदेशक ने मांग की कि पलाशबाड़ी में बन रही भगवान राम की मूर्ति को बुलडोजर से तोड़ देना चाहिए। उसने प्रशासन को अल्टीमेटम दिया कि अगर सरकार ने इसे नहीं हटाया, तो आम लोग खुद इसे तोड़ देंगे। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस कट्टरपंथी उपदेशक ने न केवल मूर्ति को निशाना बनाया, बल्कि कई भड़काऊ भाषण भी दिए। उसने भारत और दक्षिण एशियाई देशों के बीच क्षेत्रीय स्थिरता को लेकर भी आपत्तिजनक बातें कहीं। उसकी इन बातों से इलाके में तनाव काफी बढ़ गया, जिसे देखते हुए मंदिर प्रबंधन ने निर्माण कार्य रोकने का फैसला किया। बता दें कि बांग्लादेश में हालिया राजनीतिक संकट के बाद से ही अल्पसंख्यक हिंदू समाज लगातार उपद्रवियों के निशाने पर है। वहां हुई हिंसा में कई हिंदुओं की जान जा चुकी है, जबकि उनके घरों, दुकानों और धार्मिक स्थलों में तोड़फोड़ व नुकसान पहुंचाया गया है। इन हिंसक घटनाओं के कारण वहां रहने वाले अल्पसंख्यक समुदाय में डर और असुरक्षा का माहौल है।

जी7: सिगरेट से लेकर फुटबॉल पर बात, जेलेंस्की के किस से असहज हुईं मेलोनी, G7 नेताओं की हंसी-मजाक हो रही वायरल

एजेंसी/फ्रांस में आयोजित जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान जहां एक ओर वैश्विक अर्थव्यवस्था,संघर्षों और दुनिया के जटिल मुद्दों पर औपचारिक चर्चाएं हुईं, वहीं दूसरी ओर

माइक्रोफोन पर विश्व नेताओं की कुछ ऐसी अनौपचारिक बातचीत भी कैद हुई, जिसने सबका ध्यान खींच लिया। सिगरेट छोड़ने से लेकर फुटबॉल, इंस्टाग्राम और हल्के-फुल्के मजाक तक, नेताओं के कई दिलचस्प पल सामने आए।

सिगरेट छोड़ने पर मेलोनी को मिली बधाई बैठक की तैयारी के दौरान ऐसा ही एक पल तब आया, जब जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने इतालवी प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी से सहज अंदाज में पूछा कि क्या उन्होंने सुबह सिगरेट पी थी। इस पर मेलोनी के जवाब ने कई नेताओं को चौंका दिया। मेलोनी ने कहा कि उन्होंने 1 मई से सिगरेट नहीं पी है। यह सुनते ही बैठक में मौजूद नेताओं ने उनकी तारीफ की। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर, जापान की प्रधानमंत्री सानाए ताकाइची और यूरोपीय संघ के अधिकारियों ने उन्हें सिगरेट छोड़ने के लिए बधाई भी दी। इस दौरान मेलोनी ने खुशी जाहिर करते हुए दोनों हाथ ऊपर उठा दिए। वहीं कार्नी ने मजाकिया अंदाज में पूछा, श्क्या आपने निकोटिन पैच लगाया है?श जिस पर वहां मौजूद लोग हंस पड़े। जी7 सम्मेलन में भी छाया फुटबॉल का जादू भू-राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित इस शिखर सम्मेलन में फुटबॉल की भी चर्चा हुई। अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको की संयुक्त मेजबानी में आयोजित फीफा विश्व कप के बीच नेताओं की अनौपचारिक बातचीत में खेल का जिक्र बार-बार सुनाई दिया। एक नेता ने पेरिस सेंट-जर्मेन (पीएसजी) की हालिया चौंपियंस लीग जीत की तारीफ की। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने भी विश्व चौंपियन स्पेन के खिलाफ केप वर्डे के 0-0 से ड्रॉ मैच को खास बताया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने 80वें जन्मदिन पर व्हाइट हाउस में यूएफसी का आयोजन कराया। इसके लिए ट्रंप ने यूएफसी के अध्यक्ष डाना व्हाइट की जमकर तारीफ की।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

ईरान समझौते को ट्रंप बता रहे जीत, लेकिन विशेषज्ञ बोले- अमेरिका की रणनीतिक हार हुई, ये आत्मसमर्पण जैसा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ईरान के साथ शांति समझौते के लिए अपनी पीठ थपथपा रहे हैं और ईरान की हार का दावा कर रहे हैं। ट्रंप इसे अमेरिका की बड़ी कूटनीतिक जीत भी बता रहे हैं। हालांकि व्हाइट हाउस के दावों के विपरीत अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों का एक बड़ा वर्ग मानता इसे अमेरिका की जीत नहीं मानता बल्कि समझौते को अमेरिका की इस युद्ध से निकलने की कोशिश के रूप में देख रहा है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि यह समझौता वास्तव में अमेरिका और ट्रंप प्रशासन की रणनीतिक नाकामी को उजागर करता है। अमेरिका की रणनीतिक हार बता रहे विशेषज्ञ शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रॉबर्ट ए. पेप ने इस समझौते को विनाशकारी रणनीतिक पराजय करार दिया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अमेरिका एक ऐसे जाल में फंस गया, जहां युद्ध को आगे बढ़ाना भी मुश्किल था और पीछे हटना भी। विश्लेषकों के अनुसार 100 दिनों से अधिक चले संघर्ष, अरबों डॉलर के सैन्य खर्च, वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर असर, खाड़ी क्षेत्र में समुद्री व्यापार बाधित होने और अमेरिकी जनता की बढ़ती नाराजगी के बाद वॉशिंगटन को बातचीत की मेज पर लौटना पड़ा। जबकि उसका एक भी लक्ष्य अभी तक हासिल नहीं हुआ है। रक्षा मंत्री ने ही खोली पोल सीबीएस न्यूज के एक इंटरव्यू में अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने दावा किया कि अमेरिका पूरे समय होर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण बनाए हुए था। इस पर पत्रकार ने उनसे सवाल किया कि अगर अमेरिका का होर्मुज पर पूरा नियंत्रण था, तो जलडमरूमध्य को फिर से खोलना बातचीत का इतना बड़ा मुद्दा क्यों बना रहा? इस पर हेगसेथ जवाब नहीं दे सके, जिसके बाद सोशल मीडिया पर उनकी आलोचना शुरू हो गई। यूजर्स ने कहा कि इस बातचीत से अमेरिकी प्रशासन के दावों और असल स्थिति के बीच के विरोधाभास को उजागर करती है। ईरान पड़ा भारी मध्य-पूर्व मामलों के विशेषज्ञ और अनुभवी वार्ताकार एरन डेविड मिलर का कहना है कि पूरे संघर्ष के दौरान ईरान के पास महत्वपूर्ण रणनीतिक बढ़त बनी रही। उनके मुताबिक, क्षेत्रीय सहयोगी समूहों, प्रॉक्सी नेटवर्क और होर्मुज जलडमरूमध्य के जरिए ईरान की वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित करने की क्षमता ने तेहरान को मजबूत सौदेबाजी की स्थिति में रखा। डेमोक्रेटिक सांसद सेथ मौल्टन ने समझौते को लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, श्यह बेहद खराब समझौता है। यह डोनाल्ड ट्रंप की ओर से ईरान के सर्वोच्च नेता के सामने आत्मसमर्पण का दस्तावेज जैसा है। समझौते के मसौदे में क्या है? रिपोर्टों के मुताबिक, समझौते के तहत ईरान पर लगे कुछ प्रतिबंधों में राहत देने, तेल निर्यात पर प्रतिबंधों को आंशिक रूप से हटाने और पुनर्निर्माण एवं निवेश से जुड़े बड़े आर्थिक पैकेज पर चर्चा की बात सामने आई है। परमाणु कार्यक्रम से जुड़े कई अहम मुद्दों पर अंतिम सहमति नहीं बनी है और इन्हें अगले 60 दिनों की बातचीत के लिए टाल दिया गया है, जिसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। ट्रंप के लिए मध्यावधि चुनाव बड़ी चुनौती अमेरिका में नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनाव भी ट्रंप प्रशासन की चिंता बढ़ा रहे हैं। युद्ध के कारण बढ़ती ईंधन कीमतें और आर्थिक दबाव राजनीतिक रूप से प्रशासन को नुकसान पहुंचा सकते हैं। ऐसे में समझौते का समय बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। क्या टिक पाएगा यह समझौता? विशेषज्ञों का मानना है कि समझौते की सफलता अभी तय नहीं है। एरन डेविड मिलर ने चेतावनी दी है कि लेबनान और हिजबुल्लाह से जुड़े तनाव इस संघर्षविराम की पहली बड़ी परीक्षा साबित हो सकते हैं। इस्राइल पहले ही समझौते में शामिल नहीं होने की बात कह चुका है। इस्राइल में भी इस समझौते को लेकर आलोचना हो रही है। वरिष्ठ पत्रकार गिडियन लेवी ने इसे इस्राइल और प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की व्यक्तिगत हार बताया है। जीत या मजबूरी?

ट्रंप प्रशासन इस समझौते को क्षेत्रीय युद्ध रोकने और ईरान के परमाणु कार्यक्रम को नियंत्रित करने की दिशा में बड़ी उपलब्धि बता रहा है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक बड़ा वर्ग इसे ऐसे समझौते के रूप में देख रहा है, जिसमें ईरान यह दावा कर सकता है कि उसने अमेरिका के दबाव के सामने झुकने से इनकार किया। यही वजह है कि ट्रंप की जीत की घोषणा के बावजूद वैश्विक बहस में यह सवाल लगातार उठ रहा है कि क्या यह वास्तव में अमेरिकी सफलता है या फिर एक महंगे और विवादित युद्ध से निकलने का रास्ता।

`अमेरिका के बिना इस्राइल का वजूद नहीं होता': नेतन्याहू पर भड़के ट्रंप, लेबनान में बमबारी पर भी जताई नाराजगी

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस में चल रहे जी7 शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस्राइल को लेकर बेहद कड़ा रुख अपनाया है। कतर के अमीर के साथ बैठक में ट्रंप ने कहा कि अमेरिका के बिना इस्राइल का कोई वजूद नहीं होता। उन्होंने दावा किया कि उनके बिना इस्राइल का अस्तित्व नहीं बचता क्योंकि किसी और राष्ट्रपति ने वह हिम्मत नहीं दिखाई जो उन्होंने दिखाई है। ईरान के साथ इस हफ्ते होने वाले शांति समझौते से पहले ट्रंप ने मांग की है कि इस्राइल लेबनान पर बमबारी तुरंत बंद करे। ट्रंप ने अपने सहयोगी बेंजामिन नेतन्याहू के बारे में कहा कि उनके साथ मेरे रिश्ते अच्छे रहे हैं, लेकिन अब उन्हें लेबनान के मामले में ज्यादा जिम्मेदार होना पड़ेगा। ट्रंप ने लेबनान में इस्राइल के हमलों को क्रूर और हद से ज्यादा बताया। यह नाराजगी तब और

बढ़ गई जब ईरान के साथ शांति समझौते के फाइनल होने से ठीक दो घंटे पहले इस्राइल ने बेरूत पर बमबारी कर दी। रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रंप ने इस हमले के बाद नेतन्याहू से बेहद कड़े शब्दों में नाराजगी जताई। ट्रंप ने कहा कि उन्हें इस हमले का समय और तरीका बिल्कुल पसंद नहीं आया। दूसरी तरफ, इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू इस शांति समझौते से काफी नाराज हैं। उन्होंने सोमवार को एक मीडिया वार्ता में कहा कि इस्राइल को ईरान और उसके साथियों से खतरा बना हुआ है। उन्होंने साफ किया कि इस्राइल ने गाजा, लेबनान और सीरिया में जो सुरक्षा क्षेत्र बनाए हैं, वह वहां तब तक रहेगा जब तक देश की सुरक्षा के लिए जरूरी हो। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, दो मार्च से अब तक इस्राइली हमलों में 3,756 लोग मारे गए हैं और 11,000 से ज्यादा घायल हुए हैं। ट्रंप ने कहा कि हिजबुल्लाह के किसी एक सदस्य को ढूंढने के लिए पूरी रिहायशी इमारत को गिराना सही नहीं है क्योंकि वहां मासूम लोग भी रहते हैं। ट्रंप ने एक नया सुझाव देते हुए कहा कि अगर इस्राइल मासूमों को मारे बिना हिजबुल्लाह को नहीं रोक सकता, तो यह काम सीरिया को करने देना चाहिए। उन्होंने सीरियाई राष्ट्रपति अहमद अल-शरा की तारीफ की और कहा कि वे इस काम को बेहतर तरीके से कर सकते हैं। ट्रंप ने संकेत दिया कि अगर नेतन्याहू नहीं माने, तो अमेरिका हिजबुल्लाह से निपटने के लिए सीरिया के साथ साझेदारी कर सकता है। ईरान के साथ होने वाले शांति समझौते पर ट्रंप ने भरोसा जताया कि यह सफल होगा। उन्होंने उन अफवाहों को भी खारिज किया जिनमें कहा जा रहा था कि अमेरिका ईरान को पैसा दे रहा है। इस समझौते को पाकिस्तान और कतर की कोशिशों से मुमकिन बनाया गया है। कतर के अमीर ने भी इस समझौते का स्वागत किया और इसे पूरे खाड़ी क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण बताया।

ट्रंप सरकार का बड़ा कदम, इंडो-पैसिफिक कमांड का नाम बदला, क्या हैं अमेरिका के इस फैसले के मायने ?

पीटीआई, वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए अपने यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड (USINDOPACOM) का नाम बदलकर फिर से यूएस पैसिफिक कमांड (USPACOM) कर दिया है। इसके साथ ही 2018 में लिया गया आठ साल पुराना फैसला भी पलट दिया गया है। अमेरिकी रक्षा विभाग ने मंगलवार को इसकी घोषणा करते हुए कहा कि यह बदलाव कमांड के ऐतिहासिक गौरव और विरासत को सम्मान देने के लिए किया गया है। इस कमांड की स्थापना साल 1947 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन ने की थी। रक्षा विभाग के बयान के अनुसार, श1 जनवरी 1947 को स्थापित यह कमांड 70 वर्षों से अधिक समय तक यूएस पैसिफिक कमांड के नाम से संचालित होती रही। यह अमेरिका की एकीकृत सैन्य कमांडों में सबसे पुरानी और सबसे बड़ी कमांड है।श गौरतलब है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान ही वर्ष 2018 में इसका नाम बदलकर यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड कर दिया गया था। ऐतिहासिक विरासत का सम्मानरू पेंटागन अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन ने कहा कि पुराने नाम की बहाली कमांड की गहरी ऐतिहासिक जड़ों को सम्मान देती है और प्रशांत क्षेत्र में तैनात सैन्यकर्मियों के बीच गर्व और सामूहिक भावना को मजबूत करेगी। बयान में कहा गया, श्द्वितीय विश्व युद्ध के बाद क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करने से लेकर कोरियाई युद्ध, वियतनाम युद्ध और अनेक मानवीय अभियानों के समन्वय तक, यूएस पैसिफिक कमांड का नाम सैन्य विरासत और क्षेत्रीय साझेदारियों का प्रतीक रहा है।ष भारत की पश्चिमी सीमा तक फैला है दायरा रक्षा विभाग के मुताबिक, नाम बदलने के बावजूद कमांड के अधिकार क्षेत्र में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसका संचालन क्षेत्र अमेरिका के पश्चिमी तट से लेकर भारत की पश्चिमी सीमा तक फैला हुआ है। पेंटागन ने साफ किया कि कमांड का मूल मिशन और क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर एक स्वतंत्र एवं खुले क्षेत्र को बनाए रखने की प्रतिबद्धता पहले की तरह जारी रहेगी। 2018 में क्यों बदला गया था नाम? साल 2018 में तत्कालीन अमेरिकी रक्षा मंत्री जेम्स मैटिस ने कमांड का नाम बदलकर इंडो-पैसिफिक कमांड करने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच बढ़ती रणनीतिक और आर्थिक परस्पर जुड़ाव को देखते हुए यह बदलाव किया गया है। मैटिस ने उस समय कहा था कि यह कमांड श्बॉलीवुड से हॉलीवुड तक और पेंगुइन से ध्रुवीय भालुओं तकश फैले विशाल क्षेत्र की जिम्मेदारी संभालती है और अमेरिका की राष्ट्रीय रक्षा रणनीति में इसकी अहम भूमिका है। क्या हैं इसके मायने? साल 2018 में जब यूएस पैसिफिक कमांड का नाम बदलकर इंडो पैसिफिक कमांड किया गया था तो इसे अमेरिका और भारत के रणनीतिक रिश्तों में आ रही तेजी के तौर पर देखा गया था। बीते कुछ वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच कई ऐसे समझौते हुए, जिससे दोनों देशों के रणनीतिक संबंध काफी मजबूत हुए थे। हालांकि ट्रंप सरकार के दूसरे कार्यकाल में भारत और अमेरिका के रिश्तों में खटास आई है। पहले टैरिफ को लेकर और फिर ऑपरेशन सिंदूर में युद्धविराम के मुद्दे पर भारत और अमेरिकी सरकार के बीच मतभेद दिखे। इस सबके बीच अब अमेरिका का इंडो पैसिफिक कमांड का नाम बदलना कई सवाल खड़े कर रहा है।

जी 7 शिखर सम्मेलनः जापान ने उठाया हिंद-प्रशांत क्षेत्र और चीन की चुनौतियों का मुद्दा

एवियन, एजेंसी। फ्रांस में चल रहे जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान जापान की प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची ने चीन से जुड़ी क्षेत्रीय चुनौतियों को प्रमुखता से उठाया। जापानी प्रधानमंत्री ने कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिति और विभिन्न सुरक्षा चुनौतियों पर जी-7 देशों के बीच समन्वय आवश्यक है। ताकाइची ने मंगलवार को सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, जी-7 नेताओं के रात्रिभोज में पश्चिम एशिया की स्थिति, रूस-यूक्रेन संघर्ष, हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा और महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति शृंखला को मजबूत करने जैसे मुद्दों पर खुलकर चर्चा हुई। जापान ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिति और चीन से जुड़ी विभिन्न चुनौतियों पर अपना दृष्टिकोण साझेदार देशों के सामने रखा। ताकाइची के अनुसार, जी-7 देशों ने इन मुद्दों पर मिलकर और करीबी समन्वय के साथ काम करने की आवश्यकता पर सहमति जताई। जापानी प्रधानमंत्री ने पश्चिम एशिया की स्थिति पर चिंता जताते हुए होर्मुज जलडमरूमध्य से समुद्री व्यापार निर्बाध रूप से जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने ईरान के परमाणु हथियार कार्यक्रम को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के साथ सहयोग की वकालत की। भारत की कोशिशें अफ्रीका को मजबूत कर रहीं

जी-7 सम्मेलन में पीएम मोदी ने कहा, भारत का मानना है कि साझेदारी की असली कसौटी यह नहीं है कि हम दूसरों के लिए क्या बनाते हैं, बल्कि यह है कि हम उन्हें खुद के लिए कुछ बनाने में कैसे सक्षम बनाते हैं। हमारी विकास साझेदारियां इसी भावना को दर्शाती हैं। हमारी कोशिशें सहयोगी देशों में क्षमता निर्माण और कौशल विकास पर केंद्रित रही हैं। प्रधानमंत्री ने इसके लिए अफ्रीका का उदाहरण दिया और कहा, अफ्रीका में भारत की साझेदारी में ट्रेनिंग, क्षमता निर्माण, जल संसाधन, कृषि और ऊर्जा जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

नौकरी और H-1B वीजा के बदले रु 94 लाख मांगने का आरोप, अमेरिका में भारतीय कर्मचारी ने मालिक पर किया केस

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास में एक भारतीय कर्मचारी ने अपने मालिक के खिलाफ अदालत में केस दर्ज किया है। ऋषिकेश राज मीसाला नाम के इस कर्मचारी ने आरोप लगाया है कि उसके मालिक ने नौकरी और वीजा बचाने के बदले उससे करीब 94 लाख रुपये (एक लाख डॉलर) की मांग की। ऋषिकेश का कहना है कि उनके भारतीय-अमेरिकी मालिक साई जितेंद्र कलागरा ने उन पर पैसे देने के लिए भारी दबाव बनाया। शिकायत के मुताबिक, जब ऋषिकेश ने इन पैसों को लेकर सवाल उठाए, तो उन्हें डराया गया। मालिक ने धमकी दी कि वह उनकी शिकायत अमेरिकी इमिग्रेशन विभाग (ICE) से कर देगा। इतना ही नहीं, ऋषिकेश ने यह भी आरोप लगाया कि उनके पिता को भी नुकसान पहुंचाने की धमकी दी गई। हालांकि, अभी तक अदालत में ये आरोप साबित नहीं हुए हैं। ऋषिकेश साल 2023 में अपनी मास्टर डिग्री पूरी करने के बाद छात्र वीजा पर अमेरिका आए थे। बाद में उन्हें एक ऐसी कंपनी में नौकरी मिली जो H-1B वीजा देती है। यह वीजा अमेरिकी कंपनियों को विदेशी पेशेवरों को काम पर रखने की अनुमति देता है। ऋषिकेश को उम्मीद थी कि इस नौकरी से उन्हें अमेरिका में पक्की नागरिकता मिल जाएगी। लेकिन कंपनी में शामिल होने के बाद उन्हें बेंच पर रख दिया गया। इसका मतलब है कि कर्मचारी के पास कोई सक्रिय प्रोजेक्ट नहीं है। केस के अनुसार, काम न होने के बावजूद ऋषिकेश से मोटी रकम मांगी गई ताकि कागजों पर उनकी नौकरी चलती रहे और उनका H-1B वीजा सुरक्षित रहे। आरोप है कि कंपनी ने ऋषिकेश के वेतन से जुड़े दस्तावेज भी रोक लिए। ये दस्तावेज नौकरी बदलने या वीजा रिन्यू कराने के लिए बहुत जरूरी होते हैं। ऋषिकेश ने बताया कि वीजा खोने के डर से उन्होंने लगभग 8,800 डॉलर नकद भी दिए थे। अब ऋषिकेश की कानूनी टीम ने कंपनी पर मानव तस्करी और जबरन मजदूरी जैसे गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि कंपनी को ऋषिकेश के रुके हुए वेतन और जबरन लिए गए पैसों के बदले करीब 97,248 डॉलर चुकाने चाहिए। यह मामला ऐसे समय में आया है जब अमेरिका में H-1B वीजा को लेकर काफी चर्चा हो रही है। भारत के लोग इस वीजा का सबसे ज्यादा फायदा उठाते हैं। साल 2024 के आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका में मंजूर होने वाले कुल H-1B वीजा में से 71 प्रतिशत भारतीय नागरिकों को मिले हैं। यह प्रोग्राम तकनीक और इंजीनियरिंग क्षेत्र की कंपनियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

यूक्रेन को हथियार आपूर्ति से US-ईरान डील के स्वागत तक, जी7 देशों के बयान में खास क्या?

एवियन, एजेंसी। दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों के समूह जी7 के नेताओं ने अमेरिका और ईरान के बीच हुए समजौते का समर्थन किया है। इन नेताओं ने यूक्रेन को लेकर भी अपना समर्थन दोहराया है। फ्रांस के एवियन-लेस-बैंस में हुए 52वें जी7 शिखर सम्मेलन में इन नेताओं ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए अधिक सहयोग करने की बात कही। भू-राजनीतिक मुद्दों पर जारी बयान में जी7 देशों ने यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए मजबूत समर्थन देने की बात दोहराई।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।